मार्गदर्शिका

राजनीति-विज्ञान

गुणात्मक, रुचिकर एवं क्रियात्मक अध्ययन मार्गदर्शिका

(राजनीति-विज्ञान प्रवक्ताओं हेतु)

2016-17

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

षष्टम-मार्गदर्शिका

राजनीति-विज्ञान

शीतयुद्धोत्तर विश्व राजनीति

मुख्य सलाहकार

पी.एस. श्रीवास्तव

आई.ए.एस. शिक्षा सचिव, दिल्ली सरकार

चेयरपर्सन, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली

मार्ग दर्शन

श्रीमती अनिता सेतिया

निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

डॉ. प्रतिभा शर्मा

संयुक्त निदेशक एवं राज्य शिक्षक समन्वयक एस.सी.ई.आर.टी.

शैक्षिक समन्वयक

डॉ. नीलम

वरिष्ठ प्रवक्ता डाइट राजेन्द्र नगर

डॉ. पवन कुमार

वरिष्ठ प्रवक्ता डाइट केशव कुमार

लेखन समूह

डॉ. नीलम	डाइट राजेन्द्र नगर
डॉ. पवन कुमार	डाइट केशव पुरम्
श्रीमान मवन साहनी	सी.बी.एस.ई. विषय विशेषज्ञ
डॉ. भगवती प्रसाद ध्यानी	शिक्षा निदेशालय
श्रीमान श्याम किशोर गुप्ता	शिक्षा निदेशालय
श्रीमान तपराज वत्त	शिक्षा निदेशालय
श्रीमान रमेश	रावल कॉलेज ऑफ एजुकेशन
मोहम्मद नासिर	शिक्षा निदेशालय
श्रीमती ऊषा किरन	शिक्षा निदेशालय
श्रीमान अरुण कुमार	एस.सी.ई.आर.टी.
श्रीमान राजीव रंजन	एस.सी.ई.आर.टी.

वेटिड एवं सम्पादन

श्रीमान मवन साहनी

डॉ. भगवती प्रसाद ध्यानी

प्रकाशन समूह

सपना यादव *एवं* **मीनाक्षी यादव**

प्रकाशक : राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली

टंकण : एजूकेशनल स्टोर्स, एस-5, बुलन्दशहर रोड, इण्डस्ट्रीयल एरिया, साईट-I, गाजियाबाद (उ.प्र.)

विषय-सूची

1.	शीत युद्ध का दौर	40
2.	दो ध्रुवीयता का अन्त	46
3.	अमेरिका वर्चस्व का दौर	52
4.	वैश्वीकरण	58

आमुख-1

21 वीं सदी में सरकार का मुख्य ध्यान आम आदमी को सशक्त करते हुए जीवन के बुनियादी कौशलों को विकसित करना है ताकि भारत के लोकतंत्र को और प्रभावी बनाया जा सके।

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र भविष्य के आने वाले नागरिक है अतः यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि वे न केवल अच्छे अंक प्राप्त करें बल्कि वे जिम्मेदार व उत्पादित नागरिक बन सकें।

प्रस्तुत सहायक पाठ्य सामग्री शिक्षा निदेशालय दिल्ली सरकार के राजनीति विज्ञान के प्रवक्ताओं हेतु और तैयार की गयी है जिसका उद्देश्य उनकी शैक्षणिक क्षमताओं का विस्तार करना है।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद तथा मण्डलीय शिक्षा तथा प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा समय-समय पर तैयार की गयी शिक्षक संदर्शिकाए इन लक्ष्यों को प्राप्त करने का एक प्रयास है। इन शिक्षक संदर्शिका का उद्देश्य शिक्षण अधिगम को अधिक अंतः क्रियात्मक बनाना है जैसा कि राष्ट्रीय पाठ्याचार की रूपरेखा 2005 में रेखाकिंत है।

मैं इन विषय विशेषज्ञों के प्रति आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने अपने बहुमूल्य विचार प्रस्तुत किए। साथ ही मैं संदर्शिका लेखन में सम्मिलित संयोजकों, लेखक समूह व संपादन मंडल के साथ-साथ सभी राज्य शैक्षिक व अनुसंधान परिषद तथा मंडलीय शिक्षा व प्रशिक्षण संस्थानों के शैक्षणिक व गैर-शैक्षणिक पदाधिकारियों व प्रकाशन विभाग के अमूल्य योगदान की सराहना करती हूँ।

यह मेरा मूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत संदर्शिका अध्यापकों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी आपके सुझाव एवं विचार आंमत्रित है।

–अनिता सेतिया

निदेशक

आमुख-2

प्रस्तुत सहायक पाठ्यसामग्री को राजनीति-विज्ञान की अवधारणा के अनुसार संबंद्ध करने का प्रयास किय गया है। कक्षा ग्यारहवीं और बाहरवीं के विभिन्न संबधित अध्यायों को इस माड्यूल में मिश्रित रूप में प्रस्तुत किया गया है। दोनों कक्षाओं की राजनीति विज्ञान की सामग्री को 6 माड्यूल्स के अंतर्गत निम्नलिखित शीर्षकों में विभक्त किया गया है:-

1. प्रथम माड्यूल→ राष्ट्रवाद एवं विकास
2. द्वितीय माड्यूल→ संविधान का दर्शन एवं व्यवहार
3. तृतीय माड्यूल→ राजनीतिक सिद्धाँत व अवधारणाएँ
4. चतुर्थ माड्यूल→ समकालीन विश्व संगठन एवं भारत
5. पंचम माड्यूल→ भारतीय शासन एवं राजनीति
6. षष्टम माड्यूल→ शीतयुद्धोत्तर विश्व राजनीति

उपरोक्त माड्यूल्स के अतंर्गत अवधारणाओं को इस रूप में स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है जिससे एक समझ बने न कि अवधारणाएँ केवल ज्ञान तथ्यों एवं सूचनाओं तक ही सीमित रह जाए। साथ ही प्रत्येक प्रकरण में अभ्यास व क्रियाकलापों को रोचक बनाते हुए इस तरह संरचित किए गए है जो उन्हें सोचने के लिए प्रेरित करें। प्रत्येक प्रकरण के अंतर्गत संवर्धित मूल्यों की भी बात की गयी है जो कि संविधान में निहित मूल्यों पर आधारित है।

माड्यूल निर्माण में जो समूह कार्य के लिए बनाया गया उन्हें लंबा शिक्षण अनुभव है।

माड्यूल निर्माण समिति के सदस्यों की शैक्षिक विशेषज्ञता और उनके द्वारा दिए गए अमूल्य समय और इस कार्य को पूर्ण करने में सहयोग के लिए में आभार व्यक्त करती हूँ। करता हूँ।

-डॉ. नीलम
डाइट राजेन्द्र नगर
डॉ. पवन कुमार
डाइट केशव पुरम्

POLITICAL SCIENCE (028)
Class - XI (2016-17)

One Paper | Marks: 100
Time: 3 hrs.

Units **Part A: Indian Constitution at work**		Periods: 220	Marks: 100
1	Constitution Why and How and Philosophy of the Constitution	17	12
2	Rights in the Indian Constitution	16	
3	Election and Representation	11	10
4	The Executive	11	
5	The Legislature	11	10
6	The Judiciary	11	
7	Federalism	11	10
8	Local Governments	11	
9	Constitution as a living document	11	8
	Total	**110**	**50**
Part B: Political Theory			
10	Political Theory : An Introduction	10	10
11	Freedom	11	
12	Equality	11	10
13	Social Justice	12	
14	Rights	11	10
15	Citizenship	11	
16	Nationalism	11	10
17	Secularism	11	
18	Peace	1 I	10
19	Development	11	
	Total	**110**	**50**

COURSE CONTENT

Part A: Indian Constitution at Work

1. **Constitution Why and How and Philosophy of the Constitution** **17 Periods**

   Constitution: Why and How, The making of the Constitution, the Constituent Assembly, Procedural achievements and Philosophy of the Constitution.

2. **Rights in the Indian Constitution** **16 Periods**

The importance of Rights, Fundamental Rights in the Indian Constitution, Directive Principles of State Policy, Relationship between Fundamental Rights and Directive Principles

3. **Election and Representation** **11 Periods**

Elections and Democracy, Election System in India, Reservation of Constituencies, Free and Fair Elections, Electoral Reforms

4. **Legislature** **11 Periods**

Why do we need a Parliament? Two Houses of Parliament. Functions and Power of the Parliament, Legislative functions, control over Executive. Parliamentary committees. Self-regulation.

5. **Executive** **11 Periods**

What is an Executive? Different Types of Executive. Parliamentary Executive in India, Prime 'Minister and Council of Ministers. Permanent Executive: Bureaucracy.

6. **Judiciary** **11 Periods**

Why do we need an Independent Judiciary? Structure of the Judiciary, Judicial Activism, Judiciary and Rights, Judiciary and Parliament.

7. **Federalism** **11 Periods**

What is Federalism? Federalism in the Indian Constitution, Federalism with a strong Central Government, conflicts in India's federal system, Special Provisions.

8. **Local Governments** **11 Periods**

Why do we need Local Governments? Growth of Local Government in India, 73rd and 74th Amendments, implementation of 73rd and 74th Amendments.

9. **Constitution as a Living Document** **11 Periods**

Are Constitutions static? The procedure to amend the Constitution. Why have there been so many amendments? Basic Structure and Evolution of the Constitution. Constitution as a Living Document.

Part B: Political Theory

10. **Political Theory: An Introduction** **10 Periods**

What is Politics? What do we study in Political Theory? Putting Political Theory to practice. Why should we study Political Theory?

11. **Freedom** **11 Periods**

The Ideal of Freedom. What is Freedom? Why do we need constraints? Harm principle. Negative and Positive Liberty.

12. **Equality** **11 Periods**

Significance of Equality. What is Equality? Various dimensions of Equality. How can we promote Equality?

13. **Social Justice** **12 Periods**

What is Justice? Just Distribution. Justice as fairness. Pursuing Social Justice.

14. **Rights** **11 Periods**

What are Rights? Where do Rights come from? Legal Rights and the State. Kinds of Rights. Rights and Responsibilities.

15. **Citizenship** **11 Periods**

What is citizenship? Citizen and Nation, Universal Citizenship, Global Citizenship

16. **Nationalism** **11 Periods**

Nations and Nationalism, National Self-determination, Nationalism and Pluralism

17. **Secularism** **11 Periods**

What is Secularism? What is Secular State? The Western and the Indian approaches to Secularism. Criticisms and Rationale of Indian Secularism.

18. **Peace** **11 Periods**

What is Peace? Can violence ever promote peace? Peace and the State. Different Approaches to the pursuit of peace. Contemporary challenges to peace.

19. **Development** **11 Periods**

What is development? Dominant, development Model and alternative conceptions of development.

Prescribed Books:

1. Indian Constitution at work, Class XI, Published by NCERT
2. Political Theory, Class XI, Published by MCERT

Note: The above textbooks are also available in Hindi and Urdu versions.

QUESTION PAPER DESIGN 2016-17

POLITICAL SCIENCE **Code No. 028** **CLASS-XII**

Time: 3 Hours **Max. Marks: 100**

S. No	Typology of Questions	Learning Outcomes & Testing Skills	Very Short Answer (1 Mark)	Very Short Answer (2 Marks)	Short Answer (4 Marks)	Long Answer I (5 Marks) based on Passages	Map Question Picture based inter -pretation (5 Marks)	Long Answer II (6 Marks)	Marks	% weig htage
1	Remembering- (Knowledge based Simple recall questions, to know specific- facts, terms, concepts, principles, or theories; Identify, define, or recite, information)			1	2			2	22	22%
2	Understanding- (Comprehension -to be familiar with meaning and to understand conceptually, interpret, compare, contrast, explain, paraphrase information)		2 .		2	1		1	21	21%
3	Application (Use abstract information in concrete situation, to apply knowledge to new situations; Use given content to interpret a situation, provide an example, or solve a problem)	• Reasoning • Analytical Skills • Critical thinking	1 .	1		1 -	1	2	25	25%
4	**High Order Thinking Skills** (Analysis fit Synthesis-Classify, compare, contrast, or differentiate between different pieces of information; Organize and/or integrate unique pieces of information from a variety of sources) (includes Map interpretation)		1	2	1	1		1	20	20%
5	Evaluation - (Appraise, judge, and/or justify the value or worth of a decision or outcome, or to predict outcomes based on values)		1	1	1		1		12	12%
	Total		1×5=5	2×5=10	4×6=24	5×3=15	5×2=10	6×6=36	100	100%

POLITICAL SCIE7NCE (Code No. 028)

Class -XI (2016-17)

Question Paper Design

One Paper — 100 Marks

Time: 3 hrs.

Units		Periods	Marks
1	Constitution Why and How and Philosophy of the Constitution	17	12
2	Rights of the Indian Constitution	16	
3	Election and Representation	11	10
4	Executive	11	
5	Legislature	11	10
6	Judiciary	11	
7	Federalism	11	10
8	Local Governments	11	
9	Constitution as a Living Document	11	08
	Total	**110**	**50**
10	Political Theory : An Introduction	10	10
11	Freedom	11	
12	Equality	11	10
13	Social Justice	12	
14	Rights	11	10
15	Citizenship	11	
16	Nationalism	11	10
17	Secularism	11	
18	Peace	11	10
19	Development	11	
	Total	**110**	**50**

3. Weightage of Difficulty Level — Percentage

Estimated difficulty level	20%
Difficult	50%
Average Easy	30%

4. Scheme of Options:

There is internal choice for long answer questions of 6 marks.

There are three passage - based questions of 5 marks each. No questions from plus (+) boxes.

5. In order to assess different mental abilities of learners, question paper is likely to include questions based on passages, visuals such as maps, cartoons, etc. No factual question will be asked on the information given in the plus (+) boxes in the textbooks.

POLITICAL SCIENCE (Code No. 028)
Class -XII (2016-17)

One Paper | Marks: 100
Time: 3 hrs.

Units		Periods	Marks
Part A: Contemporary World Politics			
1	Cold War Era	14	14
2	The End of bipolarity	13	
3	US Hegemony in World Politics	13	
4	Alternative centres of Power	'11	16
5	Contemporary South Asia	13	
6	International Organizations	13	10
7	Security in Contemporary World	11	
8	Environment and Natural Resources	11	10
9	Globalisation	11	
	Total	**110**	**50**
Part B: Politics in India since Independence			
10	Challenges of Nation-Building	13	
11	Era of One-party Dominance	12	16
12	Politics of Planned Development	11	
13	India's External relations	13	6
14	Challenges to the Congress System	13	12
15	Crisis of the Democratic Order	13	
16	Rise of Popular Movements	11	
17	Regional aspirations	11	16
18	Recent Developments in Indian Politics	13	
	Total	**110**	**50**

COURSE CONTENTS

Part A: Contemporary World Politics

1	**Cold War Era** Emergence of two power blocs after the second world war. Arenas of the cold war. Challenges to Bipolarity: Non Aligned Movement, quest for new international economic order. India and the cold war.	14 Periods
2	**The End of Bipolarity** New entities in world politics: Russia, Balkan states and Central Asian states, Introduction of democratic politics and capitalism in post-communist regimes. India's relations with Russia and other post-communist countries.	13 Periods
3	**US Hegemony in World Politics %** Growth of unilateralism: Afghanistan, first Gulf War, response to 9/11 and attack on Iraq. Dominance and challenge to the US in economy and ideology. India's renegotiation of itsrelationshipwith the USA	13 Periods
4	**Alternative Centres of Power** Rise of China as an economic power in post-Maoera, creation and expansion of European Union, ASEAN. India's changing relations with China.	11Periods
5	**Contemporary South Asia in the Post-Cold War Era** Democratisation in Pakistan and Nepal. Ethnic conflict in Sri Lanka, Impact of economic globalization on the region. Conflicts and efforts for peace in South Asia. India's relations with its neighbours.	13 Periods
6	**International Organizations** Restructuring and the future of the UN. India's position in the restructured UN. Rise of newinternational actors: new international economic organisations, NGOs. How democratic andaccountable are the new institutions of global governance?	13 Periods
7	**Security in Contemporary World** Traditional concerns of security and politics of disarmament. Non-traditional or human Security: global poverty, health and education. Issues of human rights and migration.	11Periods
8	**Environment and Natural Resources** Environment movement and evolution of global environmental norms. Conflicts over traditional and common property resources. Rights of indigenous people. India's stand in global environmental debates.	11 Periods
9	**Globalisation** Economic, cultural and political manifestations. Debates on the nature of consequences of globalisation. Anti-globalisation movements. India as an arena of globalization and struggle against it.	11Periods
Part B: Politics in India since Independence		
10	**Challenges of Nation- Building** Nehru's approach to nation-building; Legacy of partition: challenge of refugee' resettlement, the Kashmir problem. Organisation and reorganization of states; Political conflicts over language.	13 Periods
11	**Era of One-Party Dominance** First three general elections, nature of Congress dominance at the national level, uneven dominance at the state level, coalitional nature of Congress. Major opposition parties.	12 Peroids
12	**Politics of Planned Development** Five year plans, expansion of state sector and the rise of new economic interests. Famine and suspension of five year plans. Green revolution and its political fallouts.	11 Periods
13	**India's External Relations** Nehru's foreign policy. Sino-Indian war of 1962, Indo-Pak war of 1965 and 1971. India's .nuclear programme. Shifting alliance in world politics.	13 Periods
14	**Challenges to the Congress System** Political succession after Nehru. Non-Congressism and electoral upset of 1967, Congress split and reconstitution, Congress' victory in 1971 elections, politics of 'garibi hatao'.	13 Periods

15	**Crisis of the Democratic Order** Search for 'committed' bureaucracy and judiciary. Navnirman movement in Gujarat and the' Bihar movement. Emergency: context, constitutional and extra-constitutional dimensions, resistance to emergency. .1977 elections and the formation of Janata Party. Rise of civil liberties organisations.	13 Periods
16	**Popular Movements in India** Farmers' movements, Women's movement, Environment and Development-affected people's movements. Implementation of Mandal Commission report and its aftermath.	11Periods
17'	**Regional Aspirations** Rise of regional parties. Punjab crisis and the anti Sikh riots of 1984. The Kashmir situation. Challenges and responses in the North East.	11 Periods
18	**Recent Developments in Indian politics** Participatory upsurge in1990s. Rise of the JD and the BJP. Increasing role of regional parties and coalition politics. Coalition governments:NDA (1998 - 2004)UPA (2004 - 2014)NDA (2Q14 onwards)	13 Periods

Prescribed Books:

1. Contemporary World Politics, Class XII, Published by NCERT
2. Politics in India since Independence, Class XII, Published by NCERT

Note: The above textbooks are also available in Hindi and Urdu versions.

QUESTION PAPER DESIGN 2016-17
Code No. 028

POLITICAL SCIENCE **CLASS-XII**

Time: 3 Hours **Wax. Marks: 100**

S.No	Typology of Questions	Learning Outcomes & Testing Skills	Very Short Answer (1 Mark)	Very Short Answer (2 Marks)	Short Answer (4 Marks)	Long Answer I (5 Marks) based on Passages and Picutres	Map Question Picture based inter-pretation (5 Marks)	Long Answer II (6 Marks)	Marks age	%weight
1	Remembering- (Knowledge based Simple recall questions, to know specific facts, terms, concepts, principles, or theories; Identify, define, or recite, information)	• Reasoning • Analytical Skills • Critical thinking		1	2			2	22	22%
2	Understanding- (Comprehension -to be familiar with meaning and to understand conceptually, interpret, compare, contrast, explain, paraphrase information)		2		2	1		1	21	21%
3	Application (Use abstract information in concrete situation, to apply knowledge to new situations; Use given content to interpret a situation, provide an example, or solve a problem)		1	1		1	1	2	25	25%
4	High Order Thinking Skills (Analysis & Synthesis- Classify, compare, contrast, or differentiate between different pieces of information; Organize and/or integrate unique pieces of information from a variety ofsources) (includes Map interpretation)		1	2	1	1		1	20	20%
5	Evaluation- (Appraise, judge, and/or justify the value or worth of a decision or outcome, or to predict outcomes based on values)		1	1	1		1		12	12%
	Total		**1×5=5**	**2×5=10**	**4×6=24**	**5×3=15**	**5×2=10**	**6×6=36**	**100**	**100%**

Note: Care is to be taken to cover all chapters.

The weightage or the distribution of marks over the different dimensions paper shall be as follows:-

1. Weightage of Content

Part A: Contemporary World Politics

Units		Marks
1	Cold War Era	14
2	The End of Bipolarity	
3	US Hegemony in World Politics	
4	Alternative Centres of Power	16
5	Contemporary South Asia	
6	International Organizations	10
7	Security in Contemporary World	
8	Environment and Natural Resources	,0
9	Globalization	
	Total	**50**

Part B: Politics in India since Independence

Units		Marks
10	Challenges of Nation-Building	
11	Era of One-Party Dominance	16
12 .	Politics of Planned Development	
13	India's External Relations	6
14	Challenges to the Congress System	12
15	Crisis of the Democratic Order	
16	Rise of Popular Movements	
17	Regional Aspirations	16
18	Recent Developments in Indian Politics	
	Total	**50**

2. Weightage of Difficulty Level

Estimated difficulty level	Percentage
Difficult	20%
Average	50%
Easy	30%

3. Scheme of Options:

There-is internal choice for long answer questions.

Map question has choice only with another map.

There are three passage-based or picture-based questions.

4. In order to assess different mental abilities of learners, question paper is likely to include questions based on passages, visuals such as maps, cartoons, etc. No factual question will be asked on the information given in the plus (+) boxes in the textbooks.

No. of Printed Pages : 8

Common Annual School Examination, 2015-16

Subject : Political Science

Class : XI

Time : 3 Hrs.] **[M. M. : 100**

General Instructions :

(i) All questions are compulsory.

(ii) Questions 1 to 5 are of one mark each. The answer to these questions should not exceed to 20 words each.

(iii) Questions 6 to 10 are of two marks each. The answer to these questions should not exceed 40 words each.

(iv) Questions 11 to 16 are of four marks each. The answer to these questions should not exceed 100 words each.

(v) Questions 17 to 19 are passage based. These are of 5 marks each.

(vi) Questions 20 to 21 are map or picture based. These questions too are of 5 marks each.

(vii) Questions 22 to 27 are of six marks each. The answer to these questions should not exceed 150 words each.

सामान्य निर्देश :

(i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ii) प्रश्न संख्या 1 से 5 तक सभी प्रश्न एक-एक अंक के हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 20 शब्दों से अधिक का नहीं होना चाहिए।

(iii) प्रश्न संख्या 6 से 10 तक सभी प्रश्न दो-दो अंकों के हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 40 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

(iv) प्रश्न संख्या 11 से 16 तक सभी प्रश्न चार-चार अंकों के हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 100 शब्दों से अधिक का नहीं होना चाहिए।

(v) प्रश्न संख्या 17 से 19 गद्यांशों पर आधारित हैं। इनके पाँच-पाँच अंक हैं।

(vi) प्रश्न संख्या 20 से 21 मानचित्र अथवा चित्रों पर आधारित हैं। इनके अंक भी पाँच-पाँच हैं।

(vii) प्रश्न संख्या 22 से 27 दीर्घ उत्तरीय हैं। सभी प्रश्न छः-छः अंकों के हैं। इनके उत्तर 150 शब्दों से अधिक नहीं होने चाहिए।

1. What is meant by Mandamus ?

   मैंडामस शब्द का क्या अर्थ है ?

2. From which country we borrowed the power of Judicial Review ? 1

   भारत के संविधान में न्यायिक पुनर्निरीक्षण की धारणा कहाँ से ली गई है ?

3. What is meant by peace. 1

   शान्ति से क्या तात्पर्य है ?

4. Write two political rights of a citizen ? ½) 1

   नागरिक के दो राजनीतिक अधिकार लिखिए।

5. Write full form of UNDP. 1

   UNDP का पूर्ण रूप लिखिए।

6. What do you understand by 'Question Hour' ? 2

   'प्रश्न काल' से आप क्या समझते हैं ?

7. Explain any two jurisdictions of Supreme Court. 2

   सर्वोच्च न्यायालय के कोई दो क्षेत्राधिकार स्पष्ट कीजिए।

8. Mention two features of Indian Federation. 2

   भारतीय संघीय व्यवस्था की दो विशेषताएँ लिखिए।

9. "Indian Constitution is a living document." Justify by writing your opinion about the statement. 2

   "भारत का संविधान एक जीवंत दस्तावेज है।" अपना तर्क देते हुए इस वाक्य का औचित्य स्पष्ट कीजिए।

10. Distinguish between natural rights and fundamental rights. 2

    प्राकृतिक अधिकारों तथा मौलिक अधिकारों में प्रमुख अंतर बताइए।

11. Describe any four functions of Election Commission of India. 4

    भारतीय निर्वाचन आयोग के चार मुख्य कार्यों का वर्णन कीजिए।

12. What are the demands raised by states in their quest for greater autonomy ? 4

    ज्यादा स्वायत्तता की चाह में प्रदेशों ने क्या माँगें उठाई हैं ?

13. Write any four changes that have been made in the Panchayati Raj System under 73rd Constitutional Amendment. 4

    73वें संविधान संशोधन के अन्तर्गत पंचायती राज प्रणाली में किए गए कोई चार परिवर्तन लिखिए।

14. What does it mean to give each person his/her due ? How has the meaning of 'giving each his due' changed with time ? 4

हर व्यक्ति को उसका प्राप्य देने का क्या मतलब है ? हर किसी को उसका प्राप्य देने का मतलब समय के साथ कैसे बदला जा सकता है ?

15. Mention four differences between State and Nation. 4

राज्य और राष्ट्र में चार अन्तर बताइए।

16. 'Disarmament is necessary.' Why ? 4

'निःशस्त्रीकरण आवश्यक है।' क्यों ?

17. Read the following passage and answer the questions based on it :

A democracy must ensure that individuals have certain rights and that the government will always recognise these rights. Therefore, it is often a practice in most democratic countries to list the rights of citizens in Constitution itself. Such a list of rights mentioned and protected by the Constitution is called the 'Bill of rights'. A bill of rights prohibits government from thus acting agains the rights of individuals and ensure a remedy in case there is violation of these rights.

From whom does a Constitution protect the rights of the individual ? The rights of a person may be threatened by another person or private organisation. In such a situation, the individual would need the protection of the government. So, it is necessary that the government is bound to protect the rights of the individual. On the other hand, the organs of the government (the legislature, executive, bureaucracy or even the judiciary) in the course of their functioning, may violate the rights of the person.

(a) How many fundamental rights are given to Indian citizen in the Constitution of India ? 1

(b) In case of violation of the fundamental rights of an individual, which fundamental right ensures remedy ? 1

(c) From whom does the Constitution protect the rights of an individual ? 3

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और इसके आधार पर पूछे प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

प्रजातंत्र में सुनिश्चित होना चाहिए कि व्यक्तियों को कौन-कौन-से अधिकार प्राप्त हैं जिन्हें सरकार सदैव मान्यता देगी। संविधान द्वारा प्रदान किए गए संरक्षित अधिकारों की ऐसी सूची को 'अधिकारों का घोषणा-पत्र' कहते हैं। अत: अधिकारों का घोषणा-पत्र

सरकार को नागरिकों के विरुद्ध काम करने से रोकता है और उसका उल्लंघन हो जाने पर उपचार सुनिश्चित करता है। संविधान नागरिकों के अधिकारों को किससे संरक्षित करता है? नागरिक के अधिकारों को किसी अन्य व्यक्ति या निजी संगठन से खतरा हो सकता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को सरकार द्वारा सुरक्षा प्रदान किए जाने की आवश्यकता होती है। यह जरूरी है कि सरकार व्यक्ति के अधिकारों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हो। इसके अतिरिक्त सरकार के विभिन्न अंग (विधायिका, कार्यपालिका, नौकरशाही या न्यायपालिका) अपने कार्यों के संपादन में व्यक्ति के अधिकारों का हनन कर सकते हैं।

(a) भारत के संविधान द्वारा नागरिकों को कितने मौलिक अधिकार प्रदान किए गए हैं?

(b) मौलिक अधिकारों का उल्लंघन होने की स्थिति में किस मौलिक अधिकार के अन्तर्गत उनकी रक्षा की गई है?

(c) नागरिक के अधिकारों को किससे संरक्षित किया गया है?

18. Read the following passage and answer the questions :

Positive liberty recognises that one can be free only in society (not outside it) and hence tries to make that society such that it enables the development of the individual whereas negative liberty is only concerned with the inviolable area of non-interference and not with the conditions in society, outside this area, as such. Of cours, negative liberty would like to expand this minimum area as much as is possible keeping in mind, however, the stability of society. Generally they both go together and support each other, but it can happen that tyrants justify their rule by invoking agruments of positive liberty.

(a) What is meant by positive liberty? 2

(b) What is the concept of negative liberty? 2

(c) According to the passage what negative statement are given against positive liberty? 1

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए तथा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

सकारात्मक स्वतन्त्रता के पक्षधरों का मानना है कि व्यक्ति केवल समाज में ही स्वतन्त्र हो सकता है, समाज के बाहर नहीं और इसीलिए वह इस समाज को ऐसा बनाने का प्रयास करते हैं, जो व्यक्ति के विकास का रास्ता साफ करे। दूसरी ओर नकारात्मक स्वतन्त्रता का सरोकार अहस्तक्षेप के अनुलंघनीय क्षेत्र से है, इस क्षेत्र से बाहर समाज की स्थितियों से नहीं। नकारात्मक स्वतन्त्रता अहस्तक्षेप के इस छोटे क्षेत्र का अधिक से अधिक विस्तार करना चाहेगी। हालाँकि ऐसा करने में वह समाज के स्थायित्व के ध्यान में रखेगी। आमतौर पर दोनों तरह की स्वतंत्रताएँ साथ-साथ चलती हैं और एक-दूसरे का समर्थन करती हैं लेकिन ऐसा भी

हो सकता है कि निरंकुश शासक सकारात्मक स्वतंत्रता के तर्कों का सहारा लेकर अपने शासन को न्यायोचित सिद्ध करने की कोशिश करे।

(a) सकारात्मक स्वतन्त्रता से क्या अभिप्राय है?

(b) नकारात्मक स्वतन्त्रता की अवधारणा क्या है?

(c) गद्यांश के अनुसार, सकारात्मक स्वतन्त्रता के विपक्ष में क्या तर्क दिया गया है?

19. Read the following passage and answer the questions based on it :

Attainment of equality requires that all such restrictions or privileges should be brought to an end. Since many of these systems have a sanctions of law, equality requires that the government and the law of the land should stop protecting these systems of inequality. This what our constitution does. The Constitution prohibits discrimination on grounds of religion, race, casts, sex or place of birth. Our Constitution also abolished the practice of untouchability. Most modern Constitutions and democratic governments have formally accepted the principle of equality and incorporated it as identical treatment by law to all citizens without any regard to their caste, race and religion or gender.

(a) What does the government do to establish equality? 2

(b) What is meant by 'Equality before law'? 2

(c) Which article of Constitution abolishes untouchability? 1

निम्नलिखित अवतरण को पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

समानता की प्राप्ति के लिए जरूरी है कि सभी निषेध या विशेषाधिकारों का अंत किया जाए। चूँकि ऐसी बहुत-सी व्यवस्थाओं को कानून का समर्थन प्राप्त है इसलिए यह जरूरी होगा कि सरकार और कानून असमानता की व्यवस्थाओं को संरक्षण देना बंद करें। हमारे संविधान ने भी यही किया है। संविधान धर्म, नस्ल, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव का निषेध करता है। हमारा संविधान छुआछूत की प्रथा का भी उन्मूलन करता है। अधिकतर आधुनिक संविधान और लोकतान्त्रिक सरकारें औपचारिक रूप से समानता के सिद्धांत को स्वीकार कर चुकी हैं और इस सिद्धांत को जाति, नस्ल, धर्म या लिंग पर ध्यान दिए बिना 'सभी नागरिकों को कानून के एक समान बर्ताव' के रूप में समाहित किया।

(a) समानता की स्थापना के लिए सरकारों ने क्या किया है?

(b) 'कानून के समक्ष समानता' से क्या अभिप्राय है?

(c) संविधान के किस अनुच्छेद द्वारा छुआछूत की प्रथा का उन्मूलन किया गया है?

20. Study the cartoon given below carefully and answer the following questions :

(a) Who are the people standing in front of the stage ?

(b) Why are these people standing here and why are they looking very humble ?

(c) Which Parliamentary power does this cartoon reflect ?

उपरोक्त दिए गए कार्टून का अध्ययन कीजिए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(a) मंच के समक्ष खड़े हुए व्यक्ति कौन हैं ?

(b) ये व्यक्ति यहाँ क्यों खड़े हैं तथा इतने दीन-हीन (विनम्र) क्यों दिख रहे हैं ?

(c) कार्टून संसद की किस शक्ति को प्रदर्शित कर रहा है ?

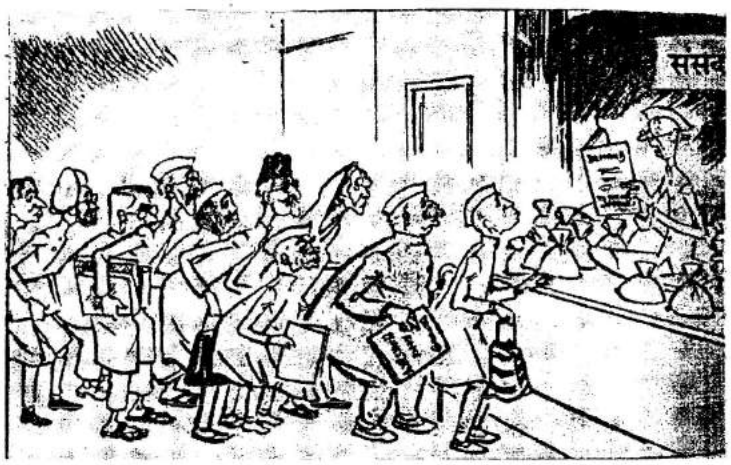

21. Study the picture given below and answer the following questions :

(a) What is meant by development ? 2

(b) What are the problems of developing countries ? 1

(c) Apart from electronic waste, which factors are responsible for damage of environment ? 2

दिए गए चित्र का ध्यानपूर्वक अध्ययन कीजिए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

(a) विकास से आप क्या समझते हैं ?

(b) विकासशील देशों की समस्याएँ क्या हैं?

(c) इलेक्ट्रॉनिक कचरे के अतिरिक्त किन कारणों से पर्यावरण को हानि होती है?

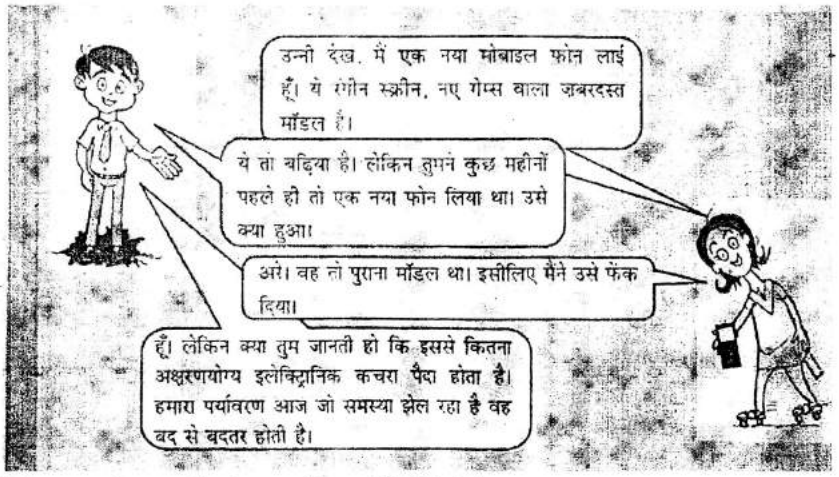

22. "India is a sovereign, secular, democratic republic." Explain. 6

"भारत प्रभुसत्ता सम्पन्न, धर्मनिरपेक्ष, लोकतान्त्रिक गणराज्य है।" व्याख्या कीजिए।

OR / अथवा

"The Constitution of India is a bag of borrowings." Discuss.

"भारतीय संविधान उधार लिए गए सिद्धांतों का समूह है।" व्याख्या कीजिए।

23. Distinguish between political executive and permanent executive. 6

राजनीतिक कार्यपालिका तथा स्थायी कार्यपालिका में अंतर लिखिए।

OR / अथवा

Discuss the functions and powers of the Prime Minister.

प्रधानमंत्री के कार्य तथा शक्तियों का वर्णन कीजिए।

24. Discuss the amending procedure of Indian Constitution. 6

भारतीय संविधान में संशोधन करने की विधियों का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

OR / अथवा

"Indian Constitution is a blend of regidity and flexibility." Explain and discuss.

"भारतीय संविधान लचीला और कठोर दोनों है।" व्याख्या कीजिए।

25. Discuss the scope of Political Science. 6

राजनीति विज्ञान के विषय क्षेत्र का वर्णन कीजिए।

OR / अथवा

Discuss the importance of political theory.

राजनीतिक सिद्धांत के महत्व का वर्णन कीजिए।

26. Distinguish between a citizen and an alien. 6

नागरिक और विदेशी में क्या अन्तर है?

OR / अथवा

How can citizenship be lost. Write in detail.

नागरिकता किस प्रकार खोई जा सकती है? विस्तारपूर्वक बताइए।

27. Is India a secular state ? Give arguments in support of your answer. 6

क्या भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है? अपने उत्तर के समर्थन में तर्क दीजिए।

OR / अथवा

Discuss the factors that establish the independence of judiciary.

न्यायपालिका की स्वतन्त्रता को स्थापित करने वाले तत्वों का वर्णन कीजिए।

No. of Printed Pages : 4

Marking Scheme

Common Annual School Examination, 2015-16

Subject : Political Science

Class : XI **[M. M. : 100**

1. हम आदेश देते हैं। 1

2. अमरीका के संविधान से। 1

3. युद्ध की अनुपस्थिति। 1

4. मत देने का अधिकार, चुनाव लड़ने का अधिकार। ½ + ½

5. United Nations Development Programme. 1
   संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम।

6. संसद के अधिवेशन के समय प्रतिदिन 'प्रश्नकाल' आता है जिसमें सांसदों द्वारा विभिन्न विषयों या मुद्दों पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सम्बन्धित मन्त्रियों को देने होते हैं। 2

7. प्रारंभिक, अपीलीय, सलाहकारी, मौलिक अधिकारों का रक्षक, न्यायिक पुर्ननिरीक्षण। (किन्हीं दो का विस्तार) 1 + 1

8. (i) भारतीय संविधान लिखित व कठोर है। 1 + 1
   (ii) केन्द्र व राज्य की शक्तियों का बटंवारा संविधान द्वारा किया गया है।
   (iii) सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना। (अथवा अन्य कोई भी विशेषता)

9. समय, परिस्थितियों व आवश्यकताओं के साथ परिवर्तनशील है, गतिशील है, या अन्य कोई तर्क। 2

10. (i) मौलिक अधिकार देश के संविधान में होते हैं प्राकृतिक अधिकार नहीं। 1 + 1
    (ii) मौलिक अधिकार न्याय संगत है जबकि प्राकृतिक अधिकार नहीं।
    (iii) प्राकृतिक अधिकार प्राकृतिक अवस्था में संभव हो सकते हैं, लेकिन मौलिक अधिकार राज्य में उपलब्ध होते हैं। (कोई दो)

11. मतदाता सूचियों को तैयार करना 4 × 1
    चुनाव के लिए तिथि निश्चित करना
    चुनाव का निरीक्षण, निर्देश तथा नियंत्रण
    चुनाव करवाना
    उप-चुनाव करवाना
    चुनाव चिन्ह प्रदान करना (अथवा अन्य कोई 4)

12. शक्तियों के बँटवारे में अधिक शक्तियाँ दी जाए जैसे पंजाब और तमिलनाडु सरकारों ने अधिक वित्तीय अधिकार। 4 × 1
प्रशासकीय विषयों पर केन्द्र का कम नियंत्रण।
हिन्दी भाषा को गैर हिन्दी भाषीय राज्यों में लागू न किया जाए।
अन्य भाषाओं व संस्कृति को प्रोत्साहन दिया जाए।
राज्यपालों को राज्यों की सलाह से नियुक्त किया जाए। (कोई चार)

13. स्थानीय स्तर की लोकतान्त्रिक संस्थाओं को संवैधानिक मान्यता। 4 × 1
तीन स्तरीय पंजायतीराज व्यवस्था
ग्राम सभा और ग्राम पंचायत की परिभाषा
पंचायतों की रचना
सदस्यों का चुनाव
पंचायती चुनाव राज्य चुनाव आयोग की निगरानी में
सीटों का आरक्षण (या अन्य कोई चार, संक्षिप्त विवरण)

14. प्लेटो के अनुसार जिसका जिसको प्राप्त है वह देना ही न्याय है। राज्य का उद्देश्य व्यक्ति का अधिकतम कल्याण है। और न्याय का अर्थ भी व्यक्ति को प्राप्य है वही देय है। वर्तमान में व्यक्ति को उसका प्राप्य देने का अर्थ लिया जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी प्रतिमा के विकास और लक्ष्य की पूर्ति के अवसर प्राप्त हों। सभी के साथ समानता का व्यवहार व अवसरों की समानता हो। (विस्तृत विवरण) 4

15. राज्य के चार अनिवार्य तत्व हैं, राष्ट्र के अनेक तत्व हैं। 4 × 1
राष्ट्र के लिए एकता की भावना अनिवार्य, राज्य के लिए नहीं।
राज्य के लिए निश्चित भू-भाग आवश्यक, राज्य के लिए नहीं।
राज्य के लिए प्रभुसत्ता अनिवार्य, राष्ट्र के लिए नहीं। (या अन्य कोई 4)

16. विश्व शांति व सुरक्षा के लिए। 4 × 1
अन्तर्राष्ट्रीय तनाव कम करने के लिए।
युद्धों की भीषणता कम करने के लिए।
विश्व के आर्थिक विकास के लिए।
सैन्यीकरण व युद्धों को रोकने के लिए।
मानवजाति के कल्याण के लिए। (या अन्य कोई 4 संक्षिप्त विवरण सहित)

17. (i) 6 1
(ii) संविधानिक उपचारों का अधिकार। 1
(iii) व्यक्ति, निजी संगठनों तथा सरकार के विभिन्न अंगों से। 3

18. (i) अनैतिक व निरंकुश प्रतिबन्धों सहित स्वतन्त्रता। 2
(ii) सभी प्रतिबन्धों का अभाव ही नकारात्मक स्वतंत्रता है। 2
(iii) निरंकुश शासक सकारात्मक स्वतन्त्रता के तर्कों का सहारा लेकर अपने शासन को न्यायोचित सिद्ध करने का प्रयास कर सकता है। (i, ii - संक्षिप्त विवरण सहित)

19. (i) बिना किसी धर्म, जाति, लिंग व जन्मस्थान के भेद के भेदभाव का निषेध, छुआछूत का उन्मूलन, कानून के समक्ष समानता की स्थापना।

(ii) कानून के समक्ष सभी समान हैं, कोई की कानून से ऊपर या विशेष नहीं है। राज्य भी सभी के लिए एकसा कानून बनाएगा बिना किसी भेदभाव, सभी पर साधारण न्यायालय में मुकदमा चलाया जाएगा, व्यक्ति चाहे कोई भी हो।

(iii) अनुच्छेद 17 (समानता के मौलिक अधिकार के अन्तर्गत)

20. (i) विभिन्न मन्त्रालयों के मन्त्रिगण। 1

(ii) मन्त्रालयों के लिए धन आबंटित कराने के लिए, संसद से स्वीकृति के पश्चात ही धन आबंटित हो सकता तथा ये कार्य विनम्रता से ही संभव हैं। 2

(iii) संसद की कराधान तथा धन के प्रयोग पर नियन्त्रण की शक्ति। 2

21. (i) विकास एक निरंतर गतिशील प्रक्रिया है जो जीवन के हर क्षेत्र में उच्चतर स्थिति को प्राप्त करने का लक्ष्य रखती है। 2

(ii) औद्योगिक विकास, गरीबी, न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति इत्यादि (या अन्य कोई) 1

(iii) भूमण्डल का ताप बढ़ना, कृषि योग्य भूमि कम होना, जल प्रदूषण, ग्रीन हाऊस गैसों का उत्सर्जन। (या अन्य कोई) 2

22. प्रभुसत्ता सम्पन्न, धर्म निरपेक्ष, लोकतन्त्रात्मक तथा गणराज्य शब्दों की संक्षिप्त व्याख्या। 6

अथवा

संविधान निर्माताओं ने खुले दिल से दूसरे देशों के संविधान के गुणों को संचित किया इसी कारण आलोचकों द्वारा संविधान के बारे में ऐसा कहा गया है पर वास्तविकता यह है कि भारतीय संविधान के निर्माण पर अनेक तत्वों का योगदान रहा है।

ब्रिटिश संविधान—शक्तिशाली लोकसभा, राष्ट्रपति मुखिया संसदीय शासन प्रणाली, एकीकृत ढाचा।

अमरीकी संविधान—मौलिक अधिकार, संविधान की सर्वोच्चता, न्यायिक पुर्ननिरीक्षण, संघात्मक ढांचा।

आयरलैंड, कनैडियन, जर्मन, आस्ट्रेलिया के संविधानों का प्रभाव बताते हुए छात्र भारतीय संविधान की मूल-भूत विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए निष्कर्षत: उसे भारतीय स्थितियों के अनुकूल प्रस्तुत करेंगे।

23. नियुक्ति सम्बन्धी, योग्यता, कार्यकाल, उत्तरदायित्व, राजनीतिक सम्बंधों, भूमिकाओं तथा परस्पर सम्बन्धों से सम्बन्धित। 6
(संक्षिप्त व्याख्या सहित)

अथवा

मन्त्रिमण्डल के नेता के रूप में—मन्त्रिपरिषद का निर्माण। विभागों का विभाजन मन्त्रिमण्डल का सभापति, मन्त्रियों का हटाना। समन्वयकारी रूप, राष्ट्रपति का मुख्य सलाहकार, सरकार का मुखिया, राष्ट्रपति तथा मन्त्रिमण्डल में महत्वपूर्ण कड़ी, सरकार का प्रमुख प्रवक्ता, संसद का नेता, नियुक्तियाँ, विदेशी नीतियों का निर्माता, संकटकालीन शक्तियाँ। (संक्षिप्त वर्णन सहित)

24. अनुच्छेद 308 में संशोधन की दो विधियों का वर्णन है। परन्तु ये तीन विधियों से होता है। 6

(i) संसद द्वारा साधारण बहुमत से नए राज्यों का निर्माण, राज्य की सीमाओं में परिवर्तन, नागरिकता की प्राप्ति समाप्ति, सर्वोच्च न्यायलय का क्षेत्राधिकार बढ़ाना।

(ii) संसद द्वारा दो-तिहाई बहुमत से संशोधन है दोनों सदनों में कुल संख्या के स्पष्ट बहुमत तथा उपस्थित व मत देने वाले सदस्यों के दो तिहाई बहुमत के पास होने के बाद राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बाद संभव।

(iii) संसद के विशेष बहुमत तथा राज्य विधान पालिकाओं के अनुमोदन द्वारा संशोधन—इसमें राष्ट्रपति का चुनाव, और चुनाव विधि, केन्द्र व राज्यो के वैधानिक सम्बन्ध, संघीय सरकार व राज्य सरकारों की कार्य-पालिका सम्बन्धी शक्तियों की सीमा इत्यादि। (विस्तारपूर्वक वर्णन)

अथवा

इसके कुछ भागों में सरलता, कुछ में कठिन व कुछ भागों में कठिनतम तरीके से ही बदलाव संभव है। इसी लिये ऐसा कहा गया है। छात्र इस में संशोधन विधियों की व्याख्या तथा संशोधन के विषय क्षेत्र सहित विस्तारपूर्वक लिखेंगे।

25. राज्य का अध्ययन, सरकार का अध्ययन, शासन प्रबन्ध का अध्ययन, समुदायों तथा संस्थानों का राजनीतिक विचारधाराओं, राजनीतिक संस्कृति, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति व संगठनों तथा सम्बन्धों, नेतृत्व का, राजनीतिक दलों, सत्ता व शक्ति का अध्ययन।
(संक्षिप्त किन्हीं छः का वर्णन)

अथवा

राजनीतिक वास्तविकता को समझने में सहायक, ज्ञान का सरलीकरण करना, व्यावहारिक दक्षताओं का विकास, समस्याएं सुलझाने में सहायक, शासन प्रणालियों को वैधता प्रदान करना, बुद्धि का विस्तार, राजनीतिक आन्दोलन की प्रेरणा, सामाजिक परिवर्तन को समझने व व्याख्या के लिए सहायक। (किन्हीं छः का संक्षिप्त परिचय) 1 × 6

26. (1) नागरिक राज्य का होता है विदेशी राज्य का सदस्य नहीं 6 × 1

(2) राज्य भक्ति के आधार पर

(3) अधिकारों के आधार पर

(4) सैनिक सेवा के आधार पर

(5) न्यायालयों के अधिकार क्षेत्र के आधार पर

(6) प्रकारों के आधार पर (संक्षिप्त अर्थ व विस्तार)

अथवा

लम्बे समय तक अनुपस्थिति, विवाह, विदेश में सरकारी नौकरी, स्वेच्छा से नागरिकता का त्याग, पराजय द्वारा, सेना से भाग जाने पर, देशद्रोह, गोद लेना, विदेश सरकार से सम्मान प्राप्त करना, विदेश में संपत्ति खरीदना। (कोई छः अर्थसहित)

27. स्वतन्त्रता के पश्चात भारत को संविधान में धर्मनिरपेक्ष घोषित किया गया है। इसकी विशेषताएँ प्रस्तावना में धर्मनिरपेक्ष शब्द का इस्तेमाल, राज्य का कोई धर्म नहीं, राज्य की दृष्टि में सब धर्म समान, धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार, कानून के समक्ष समानता, धार्मिक अल्पसंख्यकों को मौलिक अधिकार, सरकारी शिक्षा संस्थानों में धार्मिक शिक्षा की मनाही, छुआछूत की समाप्ति इत्यादि इसे सच्चा धर्मनिरपेक्ष राज्य बनाती है। (उपरोक्त बिन्दुओं की संक्षिप्त व्याख्या) 6

अथवा

(1) न्यायाधीशों की नियुक्ति कार्यपालिका द्वारा 6

(2) नौकरी की सुरक्षा

(3) लम्बा कार्यकाल

(4) अच्छा वेतन तथा पेंशन

(5) सेवा की शर्तों में हानिकारक परिवर्तन न होना

(6) न्यायाधीशों की उच्च योग्यताएँ

(7) रिटायर होने के पश्चात् वकालत की मनाही

(8) न्यायपालिका का कार्यपालिका से पृथक्करण। (कोई छः)

सीनियर स्कूल सर्टीफिकेट परीक्षा, मार्च – 2016
मूल्यांकन योजना–राजनीति विज्ञान
अपेक्षित उत्तर/मूल्य बिन्दु
59/1/1

प्र0 1. उ0	बर्लिन की दीवार से संबंधित निम्नलिखित कथनों में से कौन सा एक सही नहीं है ? a. यह पूँजीपति तथा साम्यवादी विश्व के बीच विभाजन का प्रतीक थी। b. इसका निर्माण द्वितीय विश्व युद्ध के तुरंत पश्चात् किया गया। c. लोगों द्वारा इसे 9 नवम्बर, 1989 को तोड़ दिया गया। d. यह जर्मनी के दोनों भागों के एकीकरण का प्रतीक था। यह जर्मनी के दोनों भागों के एकीकरण का प्रतीक था।	1
प्र0 2. उ0	आसियान (ए.एस.ई.ए.एन.) की स्थापना क्यों की गई ? आसियान (ए.एस.ई.ए.एन.) की स्थापना के कारण : (i) आर्थिक वृद्धि को तीव्र करने के लिए। (ii) सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के लिए। (iii)क्षेत्रीय शांति तथा स्थायित्व को बढ़ावा देने के लिए।	1
प्र0 3. उ0	दोनों में से अधिक अनिवार्य कौन सा है और क्यों – बड़े बाँधों का निर्माण अथवा इसका विरोध करने वाले पर्यावरण संबंधी आंदोलन ? परीक्षार्थी दिए हुए विकल्पों में से किसी एक के पक्ष में लिख सकता है – परन्तु उसके उत्तर के साथ तर्क होना चाहिए। जैसे – • विभिन्न क्षेत्रों के विकास के लिए बांधों का निर्माण आवश्यक है अथवा • बांधों का निर्माण लोगों के विस्थापन और पर्यावरण का निम्नीकरण करता है। अतः इसके विरूद्ध आंदोलन आवश्यक है।	1
प्र0 4. उ0	गुट–निरपेक्षता की रणनीति के माध्यम से जवाहरलाल नेहरू किन दो लक्ष्यों को प्राप्त कर लेना चाहते थे ? (i) कठिनाई से प्राप्त संप्रभुता की रक्षा । (ii) क्षेत्रीय अखण्डता और एकता को बनाए रखना। (iii)तीव्र आर्थिक विकास को बढ़ावा देना। (कोई दो)	2x½=1
प्र0 5. उ0	चिपको आंदोलन के सर्वाधिक अनूठे पहलू को उजागर कीजिए। महिलाओं की सक्रिय भागीदारी अथवा अन्य कोई उपयुक्त उत्तर	1
प्र0 6. उ0	शीत युद्ध की किन्हीं दो प्रमुख सैन्य विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (i) दो महाशक्तियों के नेतृत्व में दो सैन्य गुटों का होना। (ii) महाशक्तियां युद्ध लड़ने के खतरों अर्थात महाविनाश से परिचित थीं । अथवा अन्य कोई उपयुक्त उत्तर	2x1=2

प्र0 7.	**"स्वतंत्र भारत के नेता राजनीति को समस्या के रूप में नहीं देखते थे; वे राजनीति को समस्या के समाधान का उपाय मानते थे।" आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं ?**	
उ0	परीक्षार्थी को उत्तर के पक्ष में तर्क / तथ्य / उदाहरण देना चाहिए। उदाहरण के लिए : स्वतंत्रता आंदोलन के अधिकांश नेताओं ने राजनीति को चुना और लोगों की समस्याएं हल करने के लिए सत्ता में आने का प्रयास किया। अथवा अन्य कोई उपयुक्त उत्तर	2
प्र0 8.	**निम्नलिखित का सही मिलान कीजिए :** **'A'** — **'B'** **(a)राजनीति से प्रेरित विवादास्पद नियुक्ति** — **(i) चारू मजूमदार** **(b)1947 में रेलवे की हड़ताल का नेतृत्व किया** — **(ii) जय प्रकाश नारायण** **(c)नेहरू मंत्रिमंडल में शामिल होन से इंकार** — **(iii) जार्ज फर्नांडिस** **(d)पुलिस हिरासत में मौत** — **(iv) न्यायमूर्ति ए. एन. रे.**	
उ0	(a) (iv) न्यायमूर्ति ए. एन. रे. (b) (iii) जार्ज फर्नांडिस (c) (ii) जय प्रकाश नारायण (d) (i) चारू मजूमदार	4x½=2
प्र0 9.	**हालांकि 1950 के दशक में, देश के शेष हिस्सों को भाषायी आधार पर पुनर्गठित किया गया था, लेकिन पंजाब को 1966 तक प्रतीक्षा क्यों करनी पड़ी ?**	
उ0	'पंजाबी सूबा' आंदोलन का नेतृत्व कमजोर था और इस आंदोलन को गैर सिक्खों और सिक्खों में भी कुछ जातियों का समर्थन प्राप्त नहीं था। पंजाब का यह आंदोलन अन्य राज्यों में हुए आंदोलनों जैसा मजबूत नहीं था।	2
प्र0 10.	**पूर्वोत्तर भारत का पुनर्गठन कैसे और कब तक पूरा किया गया ?**	
उ0	उत्तर–पूर्व राज्यों का पुनर्गठन लगभग 1972 में पूरा हो गया था, जैसे 1972 में आसाम में से एक क्षेत्र ले कर मेघालय बनाया गया। मणिपुर और त्रिपूरा भी इसी वर्ष अलग राज्य के रूप में उभरे। परन्तु अरूणाचल प्रदेश 1987 में बना जबकि नागालैण्ड 1963 में ही बन गया था।	2
प्र0 11.	**चीन की नई आर्थिक नीति ने किन चार तरीकों से चीन की अर्थव्यवस्था को लाभ पहुँचाया ?**	
उ0	**(i)** जड़ता को समाप्त करके **(ii)** कृषि के निजीकरण से **(iii)**व्यापार के नए नियम और नए विशेष आर्थिक क्षेत्रों के निर्माण द्वारा **(iv)**ग्रामीण अर्थव्यवस्था में निजी बचत का परिमाण बढ़ने की तीव्र वृद्धि दर से	4x1=4

प्र0 12.	एमनेस्टी इंटरनेशनल क्या है ? इसके मुख्य कार्य लिखिए।	
उ0	• **एमनेस्टी इंटरनेशनल** एक गैर सरकारी स्वयंसेवी संगठन है। • **कार्य :** **(i)** यह मानवाधिकारों से जुड़ी रिर्पोट तैयार और प्रकाशित करता है। **(ii)** यह सरकारी अधिकारियों के दुर्व्यवहार पर ध्यान केन्द्रित करता है। **(iii)** यह मानवाधिकारों की रक्षा के लिए काम करता है। **(iv)** अन्य कोई प्रासंगिक बिन्दु।	1+3=4
प्र0 13.	**'वैश्विक संपदा से क्या अभिप्राय है ? ऐसा क्यों कहा जाता है कि वैश्विक संपदा की सुरक्षा के सवाल पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग आसान नहीं है ?**	
उ0	• विश्व की सांझी सम्पदा उन संसाधनों को कहते है जिन पर किसी एक का नहीं बल्कि पूरे अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का अधिकार होता है। जैसे पृथ्वी का वायुमंडल, अंटार्कटिका, समुद्री सतह ओर बाहरी अंतरिक्ष। • ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि : **(i)** एक सर्व–सम्मत प्यावरणीय एजेंडे पर सहमति कायम करना मुश्किल होता है। **(ii)** बाहरी अंतरिक्ष के इतिहास से भी पता चलता है कि इस क्षेत्र के प्रबन्धन पर उत्तरी और दक्षिणी गोलार्द्ध के देशों के बीच मौजूद असमानता का असर पड़ा है। **(iii)** बाहरी अंतरिक्ष में हो रहे दोहन कार्यों का लाभ न तो मौजूदा पीढ़ी में सबके लिए बराबर है और न आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए। (कोई दो कारण)	2+2=4
प्र0 14.	**भारत की कॉंग्रेस पार्टी का प्रभुत्व अन्य देशों में एकदलीय प्रभुत्व के उदाहरणों से किस प्रकार भिन्न है ? स्पष्ट कीजिए।**	
उ0	**यह निम्नलिखित कारणों से भिन्न है :** **(i)** भारत में एक पार्टी का प्रभुत्व लोकतंत्र की कीमत पर कायम नहीं हुआ है। **(ii)** भारत में बहुदलीय व्यवस्था प्रचलित थी जबकि चीन और रूस जैसे देशों में एक पार्टी का प्रभुत्व एकल पार्टी व्यवस्था के कारण था। **(iii)** भारत में म्यांमार और बेलारूस की तरह एक पार्टी का प्रभुत्व सैन्य दखलान्दजी के कारण नहीं था। **(iv)** भारत में एक पार्टी का प्रभुत्व उसकी अपनी लोकप्रियता के कारण था।	4
प्र0 15.	**भारत की मिश्रित अर्थव्यवस्था के मॉडल के मुख्य परिणामों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।**	
उ0	**भारत की मिश्रित अर्थव्यवस्था के मॉडल के मुख्य परिणाम :** **(i)** कृषि, व्यापार और उद्योगों का अधिकांश भाग निजी हाथों में छोड़ दिया गया। **(ii)** राज्य द्वारा नियंत्रित मुख्य भारी उद्योगों ने औद्योगिक ढ़ांचे, नियमित व्यापार और कृषि में महत्त्वपूर्ण हस्तक्षेप किया।	

	इससे निजी और सार्वजनिक, दोनों क्षेत्रों में वृद्धि हुई और इसने भावी विकास को आधार किया।	4
प्र0 16.	**1977 के चुनावों को जनता पार्टी ने किस प्रकार 1975 में लगाए गए आपातकाल के ऊपर जनमत संग्रह का रूप दे दिया ? व्याख्या कीजिए।**	
उ0	**जनता पार्टी ने 1977 के चुनावों को निम्नलिखित ढंग से जनमत संग्रह में बदला :** **(i)** सभी विरोधी दलों ने कांग्रेस के विरूद्ध आपस में हाथ मिलाकर जनता के सामने दोनों में से किसी एक को चुनने का विकल्प रखा। **(ii)** जनता पार्टी ने लोकतंत्र की वकालत की तथा आपातकाल को लोकतंत्र की हत्या बताया। **(iii)** जयप्रकाश नारायण विपक्ष का चेहरा बन गया और जे. पी. एंव इन्दिरा के बीच एक को चुनने का विकल्प बन गया। **(iv)** जनता पार्टी ने लोगों को लोकतंत्र और तानाशाही के बीच किसी एक कों चुनने का आह्वान किया।	4
प्र0 17.	**दिए गए अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:–** हर देश को पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की ओर पूरी तरह मुड़ना था। इसका मतलब था कि इस दौर की हर संरचना से पूरी तरह निजात पाना। 'शॉक थेरेपी' की सर्वोपरि मान्यता थी कि मिल्कियत का सबसे प्रभावी रूप निजी स्वामित्व होगा। इसके अंतर्गत राज्य की संपदा के निजीकरण और व्यावसायिक स्वामित्व के ढाँचे को तुरंत अपनाने की बात शामिल थी। 'सामूहिक फार्म' को 'निजी फार्म' में बदला गया और पूँजीवादी पद्धति से खेती शुरू हुई। इस संक्रमण में किसी भी वैकल्पिक व्यवस्था या 'तीसरे रूख़' को मंजूर नहीं किया गया। **i. ऐसे दो देशों के नाम लिखिए जिन्हें अपनी व्यवस्था में पूरी तरह से परिवर्तन लाना था।** **ii. सामूहिक फार्मों को निजी फार्मों में क्यों बदला जाना था ?** **iii. क्योंकि किसी तीसरे रास्ते की कोई सम्भावना नहीं थी, तो अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने के लिए पहले दो रास्ते कौन से थे ?**	
उ0	**(i)** आर्मीनिया, जार्जिया, उज़्बेकिस्तान अथवा सोवियत संघ के विघटन के बाद बना कोई अन्य देश। (कोई दो देश) **(ii)** राज्य नियन्त्रित अर्थव्यवस्था की समाप्ति एंव निजीकरण और उदारीकरण के लागू होने के कारण। **(iii)** a) राज्य नियंत्रित अर्थव्यवस्था (समाजवाद) b) पूंजीवाद	1+2+2=5
प्र0 18.	**दिए गए अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:** सबसे सीधा–सरल विचार यह है कि वैश्वीकरण के कारण राज्य की क्षमता यानी सरकारों को जो करना उसे करने की ताकत में कमी आती है। पूरी दुनिया में कल्याणकारी राज्य की धारणा अब पुरानी पड़ गई है और इसकी जगह न्यूनतम हस्तक्षेपकारी राज्य ने ले ली है। राज्य अब कुछेक मुख्य कामों तक ही अपने को सीमित रखता है, जैसे कानून और व्यवस्था को बनाए रखना तथा अपने नागरिकों की सुरक्षा करना। इस तरह के राज्य ने अपने को पहले के कई ऐसे लोक–कल्याणकारी	

	कामों से खींच लिया है जिनका लक्ष्य आर्थिक और सामाजिक–कल्याण होता था। लोक–कल्याणकारी राज्य की जगह अब बाज़ार आर्थिक और सामाजिक प्राथमिकताओं का प्रमुख निर्धारक है। **i. 'राज्य की क्षमता में कमी आना' एक उदाहरण द्वारा इन शब्दों का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।** **ii. 'कल्याणकारी राज्य' की धारणा का स्थान 'न्यूनतम हस्तक्षेपकारी राज्य' क्यों ले रहा है ?** **iii. बाज़ार किस प्रकार सामाजिक प्राथमिकताओं का प्रमुख निर्धारक बन गया है ?**	
उ0	**(i)** वैश्वीकरण के कारण राज्य की क्षमता यानि सरकारों को जो काम करना है, उसे करने की ताकत में कमी आती है। आजकल विभिन्न देशों की सरकारों को पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय नियमों का पालन करना पड़ता है। **(ii)** निजीकरण के कारण अधिकांश आर्थिक गतिविधियां निजी क्षेत्र में आ गई हैं। राज्यों की भूमिका आर्थिक विकास में सहायता करना, कानून व्यवस्था को बनाए रखना तथा नागरिकों को सुरक्षा प्रदान करना है। **(iii)** बहुराष्ट्रीय कंपनियां आर्थिक वृद्धि के क्षेत्र में आ गई हैं। उन्हें अपने उत्पाद बेचने के लिए बाजारों की तलाश है। अतः अब बाजार सामाजिक प्राथमिकताओं के निर्धारक बन गए हैं।	2+2+1=5
प्र0 19.	**दिए गए अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:** भारत ने जब अपना पहला परमाणु परीक्षण किया तो इसे उसने शांतिपूर्ण परीक्षण करार दिया। भारत का कहना था कि वह अणुशक्ति को सिर्फ शांतिपूर्ण उद्देश्यों में इस्तेमाल करने की अपनी नीति के प्रति दृढ़ संकल्प है। जिस वक्त परमाणु परीक्षण किया गया था वह दौर घरेलू राजनीति के लिहाज से बड़ा कठिन था। 1973 में अरब–इज़रायल युद्ध हुआ था। इसके बाद पूरे विश्व में तेल के लिए हाहाकार मचा हुआ था। अरब राष्ट्रों ने तेल के दामों में भारी वृद्धि कर दी थी। भारत इस वजह से आर्थिक समस्याओं से घिर गया। भारत में मुद्रास्फीति बहुत ज्यादा बढ़ गई। **i. भारत ने अपना पहला परमाणु परीक्षण कब किया और क्यों ?** **ii. भारत ने जब परमाणु परीक्षण किया, उस काल को भारत की घरेलू राजनीति का, सबसे कठिन काल क्यों समझा जाता है ?** **iii. 1970 के दशक के प्रारंभ में घटित किस अंतर्राष्ट्रीय घटना के कारण भारत में मँहगाई बहुत बढ़ गयी थी ?**	
उ0	**(i) मई 1974 में –** आणविक ऊर्जा को शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए, प्रयोग करने के लिए। **(ii)** अरब – इज़रायल युद्ध के कारण कीमतें बढ़ रहीं थीं। अतः भारत आर्थिक मोर्चे पर संकटों का मुकाबला कर रहा था। **(iii)** 1973 का अरब – इज़रायल युद्ध।	2+2+1=5
प्र0 20.	**नीचे दिए गए कार्टून का ध्यानपूर्वक अध्ययन कीजिए तथा निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**	

i. दिए गए कार्टून से किन्हीं चार राष्ट्रीय नेताओं की पहचान कीजिए तथा प्रत्येक की क्रम संख्या भी लिखिए।

ii. भारत के प्रधानमंत्री के रूप में नेता न. 2 के कार्यकाल का सबसे विवादास्पद मुद्दा क्या था ?

iii. 1989 के लोकसभा निर्वाचन में, क्रम संख्या एक के नेतृत्व वाले दल की स्थिति क्या थी ?

उ0

i. 1 राजीव गांधी
2 वी. पी. सिंह
3 लाल कृष्ण आडवानी
4 देवी लाल
5 ज्योति बसु
6 चन्द्र शेखर
7 एन. टी. रामा राव
8 पी. के. मोहन्तो
9 के. करूणानिधि (कोई चार)

ii. मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करना।

iii. 1989 में पार्टी बुरी तरह प्रभावित हुई तथा स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं कर सकी। (415. सांसदों से घट कर 189 पर पहुँच गइ थी)

नोटः– निम्नलिखित प्रश्न केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए प्रश्न संख्या 20 के स्थान पर हैं।

20.1 1984 के लोकसभा निर्वाचन में किस दल ने सर्वाधिक सीटें जीतीं और किसके नेतृत्व में ?

20.2 1990 में राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार ने कौन सा सर्वाधिक विवादास्पद निर्णय लिया ? 2+1+2=5

20.3 किस प्रधानमंत्री ने नए आर्थिक सुधारों की शुरूआत की तथा इसका क्या परिणाम निकला ?

उ0

20.1 (i) कांग्रेस पार्टी
(ii) राजीव गांधी के नेतृत्व में 2+1+2=5

20.2 1990 में मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करना।

20.3 नए आर्थिक सुधार राजीव गांधी द्वारा लागू किए गए। इसने आर्थिक नीति की दिशा को यकायक बदल दिया।

प्र0 21. **दिए गए दक्षिण एशिया के रेखा–मानचित्र में, पाँच देशों को A, B , C , D तथा E द्वारा चिह्नित किया गया है। नीचे दी गई जानकारी के आधार पर इनकी पहचान कीजिए और उत्तरपुस्तिका में उनके सही कम संख्या तथा संबंधित अक्षर, नीचे दी गई तालिका के रूप में लिखिए।**

प्रयोग की गई जानकारी की क्रम संख्या	संबंधित अक्षर	देश का नाम
(i) से (v) तक		

i. एक महत्त्वपूर्ण देश परंतु उसे दक्षिण ऐशिया का भाग नहीं समझा जाता।

ii. इस देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था सफल रही है।

iii. इस देश में सैनिक तथा असैनिक दोनों प्रकार के शासक रहे हैं।

iv. वह देश जहाँ संवैधानिक राजतंत्र रहा है।

v. एक द्वीपीय राष्ट्र जो 1968 तक एक सल्तनत था।

उ0

प्रयोग की गई जानकारी की क्रम संख्या	संबंधित अक्षर	देश का नाम
(i)	B	चीन
(ii)	D	श्रीलंका
(iii)	E	बांग्लादेश
(iv)	A	नेपाल
(v)	C	मालदीव

5x1=5

नोटः– निम्नलिखित प्रश्न केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए प्रश्न संख्या 21 के स्थान पर है।

21.1 दक्षिण एशिया में प्रायः कौन–कौन से देश शामिल किए जाते हैं ?

21.2 दक्षिण एशिया के कौन से दो देशों में लोकतांत्रिक व्यवस्था सफलतापूर्वक चल रही है।

21.3 दक्षेस (SAARC) तथा साफ्टा (SAFTA) के विस्तृत रूप लिखिए।

उ0

21.1 बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका, अफगानिस्तान

नोटः यदि परीक्षार्थी अफगानिस्तान नहीं लिखता है तब भी उसे अंक दिए जाएं।

21.2 श्रीलंका और भारत

21.3 **दक्षेस (SAARC)** दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहकारी संगठन

साफ्टा (SAFTA) दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार–क्षेत्र समझौता

2+1+2=5

प्र0 22. **सोवियत संघ व्यवस्था की किन्हीं तीन सकारात्मक तथा तीन नकारात्मक विषेषताओं को उजागर कीजिए।**

उ0

<u>सकारात्मक विशेषताएं :</u>

(i) सोवियत व्यवस्था अमेरीका को छोड़कर शेष पूरे विश्व से कहीं अधिक विकसित थी।

(ii) सभी नागरिकों के लिए एक न्यूनतम जीवन स्तर सुनिश्चित था।

(iii) सरकार द्वारा बुनियादी ज़रूरत की चीज़ों जैसे स्वास्थ्य सुविधा, शिक्षा, बच्चों की देखभाल तथा लोक कल्याण की अन्य चीज़ों को रियायती दर पर उपलब्ध करवाना।

(iv) बेरोजगारी का न होना।

अन्य कोई सकारात्मक विशेषता

(कोई तीन विशेषताएं)

<u>नकारात्मक विशेषताएं :</u>

(i) व्यवस्था सत्तावादी थी और नौकरशाही का कड़ा शिकंजा था।

(ii) लोकतंत्र की कमी और अनेक क्षेत्रों में स्वतंत्रता का न होना।

(iii) केवल एक दलीय व्यवस्था का होना।

(iv) पार्टी द्वारा लोगों की भावनाओं और अपेक्षाओं की अवहेलना।

अन्य कोई नकारात्मक विशेषता

(कोई तीन विशेषताएं) 3+3=6

	अथवा **यह कहना कहाँ तक उचित है कि शीत युद्ध के दौरान, अंतर्राष्ट्रीय गठबंधनों का निर्धारण महाशक्तियों की जरूरतों और छोटे देशों की लाभ हानि के गणित से होता था ? व्याख्या कीजिए।**	
उ0	यह कथन महाशक्तियों तथा उनके गठबंधन के बारे में बिल्कुल ठीक है। **(i)** महाशक्तियों ने अपनी सैन्य शक्ति का प्रयोग करके देशों को अपने पक्ष में किया। **(ii)** सोवियत संघ ने अपने गुट (गठबंधन) के देशों की बड़ी सेनाओं के बल पर पूर्वी यूरोप में अपने प्रभाव का प्रयोग किया। **(iii)** दूसरी ओर अमरीका ने सीटो और सेन्टो जैसे गठबंधन बनाए तथा उत्तरी वियतनाम, उत्तरी कोरिया और इराक के साथ सोवियत संघ और चीन ने अपने संबंध मजबूत किए। **(iv)** महत्त्वपूर्ण संसाधनों की जरूरत को पूरा करने के लिए गठबंधन बनाए गए। **(v)** महाशक्तियों को अपने हथियारों के संचालन के लिए भू–क्षेत्रों की आवश्यकता थी। **(vi)** आर्थिक मदद एक अन्य मुद्दा था। उत्तर के पक्ष में अन्य कोई बिन्दु	6x1=6
प्र0 23.	**संयुक्त राज्य अमरीका के साथ भारत के सम्बन्ध किस प्रकार के होने चाहिए। इसके बारे में, भारत के अंदर तीन विभिन्न दृष्टिकोणों का विश्लेषण कीजिए।**	
उ0	**(i)** भारत को अमरीका से अपनी दूरी बनाए रखनी चाहिए और उसे अपनी व्यापक राष्ट्रीय शक्ति पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। **(ii)** भारत को अमरीकी वर्चस्व और आपसी समझ का यथा संभव अपने हित में लाभ उठाना चाहिए। अमरीका का विरोध करना व्यर्थ होगा और अंततः भारत को क्षति पहुंचेगी। **(iii)** भारत को विकासशील देशों का गठबंधन बनाने में नेतृत्व देना चाहिए। अन्य कोई दृष्टिकोण (कोई तीन व्याख्या सहित)	3x2=6
	अथवा **ऐसे किन्हीं तीन प्रमुख कारकों का मूल्यांकन कीजिए जो यूरोपीय संघ को आर्थिक सहयोग वाली संस्था से बदल कर, एक राजनैतिक रूप देने के लिए उत्तरदायी हैं।**	
उ0	**(i)** 1949 में स्थापित यूरोपीय परिषद राजनीतिक सहयोग की दिशा में एक कदम बढ़ाना था। **(ii)** 1957 में यूरोपीय इकनामिक कम्युनिटी के गठन से राजनीतिक चर्चा शुरू हुई जिससे यूरोपीय पार्लियामेण्ट का गठन हुआ। **(iii)** सोवियत संगठन के विघटन ने यूरोप में इस प्रक्रिया को तेजी प्रदान की और 1992 में इस प्रक्रिया की परिणति यूरोपीय संघ के रूप में हुई। **(iv)** इसने अपना झंडा, स्थापना दिवस, गान और अलग मुद्रा को अपनाया। **(v)** विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के कारण इसका अपना राजनीतिक प्रभाव भी है। (कोई तीन व्याख्या सहित)	3x2=6
प्र0 24.	**ऐसे किन्हीं तीन अंतर्राष्ट्रीय चुनौतीपूर्ण मसलों का वर्णन कीजिए जिनसे तभी निपटा जा सकता है जब सभी देश साथ मिलकर कार्य करें।**	

उ0	**अंतर्राष्ट्रीय चुनौतीपूर्ण मुद्दे :** **(i)** आतंकवाद **(ii)** ग्लोबल वार्मिंग / पर्यावरणीय निम्नीकरण **(iii)** पीने के पानी की कमी **(iv)** वैश्विक गरीबी **(v)** संक्रामक रोग अन्य कोई सही मुद्दा (कोई तीन का वर्णन) **अथवा** **बाह्य सुरक्षा की पारंपरिक धारणा से क्या अभिप्राय है ? इस प्राकर की सुरक्षा के किन्हीं दो तत्त्वों का वर्णन कीजिए।**	3x2=6
उ0	• **बाह्य सुरक्षा की पारंपरिक धारणा :** किसी देश को सबसे बड़ा खतरा सैन्य खतरा माना जाता है। • **बाह्य सुरक्षा के तत्व :** **(i)** बाहरी आक्रमण के विरूद्ध अपनी रक्षा करना अथवा उसे रोकना। **(ii)** युद्ध को टालना। **(iii)** शक्ति संतुलन / गठबंधन बनाना (कोई दो व्याख्या सहित)	2+4=6
प्र0 25.	**"क्षेत्रीय माँगों को मानना और भाषा के आधार पर नए राज्यों का गठन करना, एक लोकतांत्रिक कदम के रूप में देखा गया।" इस कथन को न्यायोचित सिद्ध करने के लिए कोई तीन उपयुक्त तर्क दीजिए।**	
उ0	**कथन के समर्थन में तर्क :** **(i)** 60 वर्षों में भाषायी आधार पर बनने वाले राज्यों ने लोकतांत्रिक राजनीति की प्रकृति को सकारात्मक और रचनात्मक बना दिया है। **(ii)** भाषायी आधार पर राज्यों के निर्माण से राज्यों की सीमाएं निर्धारित करने में भाषा सभी के लिए एक समान आधार बन गई है। **(iii)** इससे देश का विघटन के बजाय एकीकरण हुआ है। **(iv)** लोगों की क्षेत्रीय अपेक्षाएं पूरी हुई हैं, लोगों को ताकत मिली है और लोकतंत्र सफल हुआ है। लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए अनेक क्षेत्रीय अपेक्षाओं को स्थान दिया जा रहा है। (कोई तीन व्याख्या सहित) **अथवा** **स्वतंत्रता के पश्चात भारत में अपनाए जाने वाले आर्थिक विकास के मॉडल से संबंधित सहमति तथा असहमति के विभिन्न क्षेत्रों का परिक्षण कीजिए।**	3x2=6
उ0	**सहमति के क्षेत्र :** **(i)** भारत के विकास का अर्थ आर्थिक वृद्धि एंव सामाजिक और आर्थिक न्याय होना चाहिए।	

	(ii) विकास के मुद्दे को केवल व्यापारियों, उद्योगपतियों और किसानों पर ही नहीं छोड़ा जा सकता अपितु सरकार को एक प्रमुख भूमिका निभानी चाहिए। (iii) गरीबी उन्मूलन तथा सामाजिक और आर्थिक पुनर्वितरण के काम को सरकार की प्राथमिक जिम्मेवारी माना गया। **असहमति के क्षेत्र :** (i) सरकार द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका पर असहमति। (ii) यदि आर्थिक वृद्धि से भिन्नता हो तो न्याय की जरूरत से जुड़े महत्त्व पर असहमति। (iii) उद्योग बनाम कृषि तथा निजी बनाम सार्वजनिक क्षेत्र के मुद्दे पर असहमति।	3+3=6
प्र0 26.	**लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु के पश्चात्, इंदिरा गांधी को प्रधान मंत्री बनाने में सहायक परिस्थितियों का विश्लेषण कीजिए। इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री के रूप में लोकप्रियता प्रदान करने वाली किन्हीं चार उपलब्धियों का उल्लेख कीजिए।**	
उ0	• **इंदिरा गांधी को प्रधान मंत्री बनाने में सहायक परिस्थितियां :** (i) इंदिरा गांधी लोकप्रिय पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की पुत्री थीं। (ii) वह 1958 में कांग्रेस अध्यक्ष बन गई थी। (iii) वह 1964–66 में शास्त्री जी के मंत्रीमंडल में सूचना मंत्री रह चुकी थीं। (कोई दो बिंदु) • **इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री के रूप में लोकप्रियता प्रदान करने वाली उपलब्धियां :** (i) उसने 'गरीबी हटाओ' का लोकप्रिय नारा दिया था। (ii) उसने सार्वजनिक क्षेत्र की वृद्धि पर ध्यान दिया। (iii) उसने ग्रामीण भूमि की तथा शहरी सम्पति की हदबन्दी की जिससे आर्थिक असमानता कम हो सके। (iv) उसने रज़वाड़ों को दी जाने वाली सुविधाएं कम कीं। (v) 1971 में भारत–पाकिस्तान युद्ध में निर्णायक जीत। (vi) 1974 में पहला आणविक विस्फोट। (कोई चार बिंदु)	2+4=6
	अथवा **25 जून, 1975 को भारत में आपात स्थिति की घोषणा किए जाने के लिए उत्तरदायी परिस्थितियों का विश्लेषण कीजिए।**	
उ0	**आपातकाल लागू करने की परिस्थितियाँ :** (i) न्यायपालिका और राजनीतिक कार्यपालिका के बीच संघर्ष। (ii) वृद्धि दर में कमी और कीमतों का बढ़ना। (iii) बिहार और गुजरात में मंहगाई और भ्रष्टाचार के विरूद्ध छात्र आंदोलन। (iv) जॉर्ज फर्नाडीज़ के नेतृत्व में रेलवे हड़ताल। (v) रामलीला मैदान की विशाल रैली जहां जयप्रकाश नारायण ने कर्मचारियों से सरकार के अवैध आदेश न मानने का आग्रह किया। (vi) इलाहाबाद हाई कोर्ट का इंदिरा गांधी के चुनाव को रद्द करने का निर्णय।	6

प्र0 27.	**भारतीय किसान यूनियन द्वारा चलाए जाने वाले किसान आंदोलन को, सर्वाधिक सफल जन आंदोलन बनाने वाले किन्हीं छः कारकों का वर्णन कीजिए।**	
उ0	i. भारतीय किसान यूनियन के नेतृत्व में चला यह आंदोलन बहुत ही अनुशासित था। ii. भारतीय किसान यूनियन ने जातिगत समुदायों को आर्थिक मसलों पर एकजुट करने के लिए 'जाति पंचायत' की परम्परागत संस्था का उपयोग किया। iii. धनराशि एंव संसाधन जुटाने के लिए भारतीय किसान यूनियन ने इसी जातिगत–वंशगत सम्पर्क जाल का प्रयोग किया। iv. भारतीय किसान यूनियन की मांगे किसानों की चिर प्रतीक्षित मांगे थीं और उनके हित में थीं। इसलिए किसानों द्वारा तुरन्त स्वीकार कर ली गईं। v. भारतीय किसान यूनियन ने स्वंय को अराजनीतिक रखा और एक दबाव समूह के रूप.में काम किया। vi. भारतीय किसान यूनियन ने दबाव की नीति प्रयोग की और किसानों की शक्ति का प्रदर्शन किया। अन्य कोई उपयुक्त बिंदु	6x1=6
	अथवा **क्षेत्रीय आकांक्षाएँ तथा उनकी पूर्ति लोकतांत्रिक राजनीति का एक अभिन्न अंग है। इस विचार से मिलने वाली किन्हीं तीन शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।**	
उ0	i. क्षेत्रीय आकाक्षाएं लोकतांत्रिक राजनीति का महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं और क्षेत्रीय आकाक्षाओं को अभिव्यक्त करना सामान्य है। ii. क्षेत्रीय मुद्दों को सुलझाने के लिए वार्ताएं और संवाद सर्वश्रेष्ठ तरीके हैं। iii. क्षेत्रीय मुद्दों को सत्ता की साझेदारी के माध्यम से संवैधानिक ढ़ांचे में ही हल किया जा सकता है। iv. क्षेत्रीय संतुलन और आर्थिक विकास से भेदभाव की भावना में कमी आती है। अतः क्षेत्रों के पिछड़ेपन को प्राथमिकता के आधार पर दूर करने के प्रयास होने चाहिए। v. संवैधानिक प्रावधानों में ही क्षेत्रीय मुद्दों को सुलझाने के प्रावधान पहले से ही निहित हैं। संविधान की छटी अनुसूची विभिन्न कबीलों (जन जातियों) को अपनी प्रथाओं और पारम्परिक कानूनों को संरक्षित रखने की अनुमति देती है। vi. संघवाद का सही अर्थों में सम्मान होना चाहिए। अन्य कोई उपयुक्त शिक्षा (कोई तीन बिंदु)	3x2=6

पाठ-1

शीत युद्ध का दौर

परिचय

राजनीति और इतिहास से हम समझ सकते हैं कि युद्ध कभी भी लाभकारी नहीं होते। इनसे जान माल की हानि के साथ-साथ असुरक्षा और अशान्ति को बढ़ावा मिलता है, भय का वातावरण बनता है और अनेक चिन्ताएं और आशंकाए उभरती है। यह सब कुछ जानते हुए भी विश्व ने कई छोटे बड़े युद्धों को देखा और सहा है। इस अध्याय में हम एक स्थिति के बारे में जानेंगे जहाँ निरन्तर युद्ध का भय और परिस्थितियां बनी रहीं परन्तु किसी बड़े पैमाने पर कोई रक्त रंजित युद्ध नहीं हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध के अन्तिम दिनों में अमेरीका ने 1945 में जापान के नागासाकी और हिरोशिमा पर परमाणु बम्ब गिरा कर यह दिखाने की कोशिश की कि उसके पास अपार सैन्य शक्ति है। इस प्रदर्शन से भयानक ढंग से जान-माल की क्षति हुई परन्तु अमेरीका विश्व के सभी देशों और विशेष रूप से अपने प्रतिद्वन्द्री सोवियत संघ को यह सन्देश पहुंचाने में सफल रहा कि वह एक महाशक्ति है उसके पास अपार मारक शक्ति है। इस घटना के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के बीच अविश्वास और मुकाबले का दौर शुरू हुआ और अनेक बार युद्ध की स्थितियां बनी परन्तु युद्ध नहीं हुआ और ऐसी स्थिति को ही 'शीत-युद्ध' का नाम दिया गया।

अधिगम परिणाम

- छात्र युद्ध की त्रासदी और हानि को अनुभव कर सकेंगे।
- शीत युद्ध के कारणों को समझ सकेंगे।
- शीत युद्ध के भागीदार खेमों (गुटों) तथा उनमें शामिल देशों के नाम जान पाएंगे।
- शीत युद्ध के परिणामों की व्याख्या कर सकेंगे।
- गुट निरपेक्षता की नीति के उद्देश्य एवं प्रभाव को समझ सकेंगे।

विषय वस्तु

मित्र राष्ट्रों (अमेरिका, ब्रिटेन, सोवियत संघ तथा पश्चिमी शक्तियां) और धुरी राष्ट्रों (जर्मनी, इटली, जापान) के बीच हुआ द्वितीय विश्व युद्ध 1945 में समाप्त हो गया। द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के समय अमेरिका द्वारा जापान के नागासाकी और हिरोशिमा पर बम्ब गिराए जाने से सोवियत संघ और संयुक्त राज अमेरिका के बीच अविश्वास ओर सन्देह का वातावरण बना। अमेरिका ने बम्ब गिराए जाने से पूर्व मित्र सोवियत संघ को विश्वास में नहीं लिया था जबकि इंगलैण्ड और फ्रांस को इसकी जानकारी दी गई थी। युद्ध समाप्ति के बाद दोनों एक दूसरे पर आरोप लगाते रहे और दोनों के बीच प्रतिद्वन्द्विता बढ़ती गई।

संयुक्त राज्य अमेरिका औरसोवियत संघ दोनों ही शक्तिशाली देश थे परन्तु उनके बीच विश्व की सबसे बड़ी शक्ति बनने की होड़ लगी हुई थी। दोनों के पास परमाणु हथियारों का भण्डार था तो दोनों को इससे होने वाले विनाश का अनुमान भी था। दोनों ही युद्ध से भयभीत थे और युद्ध का जोखिम नहीं लेना चाहते थे परन्तु दोनों के बीच प्रतिद्वन्द्विता और होड़ बढ़ती गई।

1961 में सोवियत संघ को यह आभास हुआ कि अमेरिका अपने तट के निकट के एक द्वीपीय देश क्यूबा पर आक्रमण करेगा। सोवियत संघ क्यूबा को आर्थिक और कूटनीतिक सहायता देता था अतः वह आभास से सर्तक हो गया और उसने क्यूबा को अपने सैन्य अड्डे के रूप में बदलने का निर्णय लिया।

सोवियत संघ ने क्यूबा में अपनी परमाणु मिसाइलें तैनात कर दीं जो अमेरिका के मुख्य भू-भाग को ध्वस्त कर सकतीं थी। सोवियत संघ की इस कार्रवाई की जानकारी अमेरिका को 3 सप्ताह बाद मिली। अमेरिका के पास क्यूबा पर आक्रमण करने का मौका था परन्तु उसे परमाणु मिसाइलों से होने वाली क्षति का भी अनुमान था। अतः अमेरिका ने आक्रमण करने के बजाय अपने जंगी बेड़े को आगे करके क्यूबा की तरफ जाने वाले सोवियत संघ के जहाजों को रोकने के आदेश दिए। यह स्थिति युद्ध होने का संकेत थी और युद्ध की इस आशंका ने पूरे विश्व को बेचैन कर दिया। इस स्थिति को **क्यूबा मिसाईल** संकट भी कहा जाता है। यह टकराव पूरे विश्व को व्यापक क्षति पहुंचाने वाला युद्ध होता परन्तु दोनों ने संयम का परिचय दिया और युद्ध को टालते रहे।

1961 में उपजी यह स्थिति ऐसी थी जिसमें युद्ध के हालात, तनाव और भय निरन्तर बना रहा परन्तु व्यापक स्तर पर कोई युद्ध नहीं हुआ। ऐसी स्थिति को ही शीत युद्ध कहा गया जब अमेरिका और सोवियत संघ के बीच युद्ध की स्थिति, तनाव ओर भय निरन्तर बना रहा परन्तु युद्ध नहीं हुआ।

यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि दोनों महाशक्तियों को ज्ञात था कि यदि कोई भी परमाणु युद्ध की पहल करेगा तो दूसरी महाशक्ति के पास पर्याप्त हथियार थे कि वह पहल करने वाली शक्ति को भरपूर क्षति पहुंचा सकें। कहने का अभिप्राय यह है कि दोनो महाशक्तियों के पास इतने परमाणु हथियार थे कि उनके प्रयोग से वह स्वयं भी नष्ट हो जाते और पूरी दुनियां भी क्षतिग्रस्त होती। अतः दोनो ही ओर से रोक और सन्तुलन ने युद्ध नहीं होने दिया। इस रोक और सन्तुलन को 'अपरोध' नाम दिया गया।

सन्देह और अविश्वास के इस वातावरण में तथा महाशक्तियों के बीच प्रतिद्वन्द्विता से ऐसी स्थिति बनी कि कुछ देश संयुक्त राजय अमेरिका के साथ जुड़ कर एक गुट के रूप में संगठित हुए तो कुछ अन्य देशों ने सोवियत संघ के साथ मिल कर एक गुट बनाया। यह दो गुट शक्ति के दो ध्रुव बन गए और ऐसी स्थिति के कारण दो ध्रुवीय विश्व का प्रारम्भ हुआ।

अनेक छोटे-छोटे देश अपने स्थानीय प्रतिद्वन्द्वी का मुकाबला करने तथा अपनी सुरक्षा को पक्का करने के लिए इन महाशक्तियों से जुड़ गए जिससे उन्हें सुरक्षा का वायदा, हथियार और आर्थिक सहायता प्राप्त हुई। इस प्रक्रिया में पश्चिमी यूरोप के अधिकांश देश अमेरिका के खेमे से जुड़े जबकि पूर्वी यूरोप के अधिकतर देश सोवियत संघ के साथ जुड़े और इसी कारण से इन गठबन्धनों को पश्चिमी गठबन्धन (अमेरिकी खेमा) और पूर्वी गठबन्धन (सोवियत संघ का खेमा) भी कहते हैं। पश्चिमी गठबन्धन में 12 देश शामिल थे जिन्होंने नाटो (नार्थ एटलांटिक सन्धि) संगठन की स्थापना की इसी प्रकार पूर्वी गठबन्धन को वारसा सन्धि (वारसा पैक्ट) के नाम से जाना जाता है। एक ओर नाटो में ब्रिटेन, नार्वे, डेनमार्क, नीदरलैण्ड, बेल्जियम, फ्रांस, पश्चिमी जर्मनी, पुर्तगाल, स्पेन, इटली और लक्समबर्ग शामिल

तो दूसरी ओर सोवियत संघ, पोलैण्ड, पूर्वी जर्मनी, चेकोस्लवाकिया, बुल्गारिया, रोमानिया, हंगरी इत्यादी शामिल थे।

जहां छोटे देशों को महाशक्तियों से गठबन्धन करके सुरक्षा, आर्थिक और सैन्य सहायता मिलती थी वहीं बड़े देशों को छोटे देशों के साथ गठबन्धन करने पर छोटे देशों के संसाधनों का उपयोग करने; उनके भू-क्षेत्र से हथियारों का संचालन कर पाने, अन्य देशों की जासूसी करने के लिए वहां ठिकाना बनाने तथा सैन्य खर्चे के रूप में आर्थिक साधन प्राप्त करने की सुविधा प्राप्त होती है। इस लिए महाशक्तियां छोटे देशों को अपने गठबन्धन में बनाए रखती हैं।

शीत युद्ध के कारण

1. शक्ति प्रदर्शन के लिए संघर्ष
2. समाजवाद और पूंजीवादी विचारधारा के बीच संघर्ष
3. हथियारों के भण्डार

शीत युद्ध का बढ़ता दायरा

1. **सोवियत संघ द्वारा मार्शल योजना का विरोध :** अमेरिका ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान नुकसान उठाने वाले यूरोपीय देशों को सहायता के लिए मार्शल योजना के अन्तर्गत यूरोपीय देशों को साम्यवादी विचारधारा से बचाने के लिए विकास कार्यक्रम चलाया जो सोवियत संघ के प्रतिकूल था तथा उसने इस योजना का विराध किया।
2. **जर्मनी का विभाजन :** द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मनी ने आत्म समर्पण कर दिया और युद्ध समाप्त हो गया। परन्तु पश्चिमी जर्मनी पर अमेरिका का कब्जा था तो पूर्वी जर्मनी पर सोवियत रूस का कब्जा था। 1948 में सोवियत संघ ने अपने कब्जे के पूर्वी जर्मनी की नाकेबन्दी करके पश्चिमी जर्मनी से हर प्रकार से सम्बन्ध, यातायात और संचार को बन्द कर दिया परन्तु इस स्थिति में अमेरिका हवाई मार्ग से पूर्वी जर्मनी की सहायता करता रहा और सोवियत संघ कोई भी कार्रवाई करने से बचता रहा।
3. जर्मनी की भांति कोरिया का भी द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विभाजन हो गया। उत्तरी कोरिया में कम्युनिस्टों का अधिकार था तो दक्षिणी कोरिया में अमेरिकी रवेये का अधिकार था। दोनों के बीच सशस्त्र संघर्ष हुआ। एक लम्बे संघर्ष के बाद 1953 में युद्ध विराम हुआ और इसने शीत युद्ध को बढ़ावा दिया।
4. 1961 में क्यूबा का मिसाइल संकट शीत युद्ध को चरम पर ले गया और पूरा विश्व युद्ध की सम्भावना से चिन्तित था।
5. **वियतनाम का युद्ध**—उत्तरी वियतनाम और दक्षिणी वियतनाम के बीच एक लम्बा संघर्ष चला जिसमें अमेरिका ने 1964 में खुल कर दक्षिणी वियतनाम का साथ दिया और स्वयं युद्ध में भाग लिया। इस युद्ध में अमेरिका को अपार क्षति का सामना करना पड़ा। अमेरिका द्वारा किए गए इस हस्तक्षेप से शीत युद्ध की स्थिति बिगड़ी।
5. संयुक्त राज्य अमेरिका ने साम्यवादी विचारधारा के विरोध के चलते 1971 तक चीन को संयुक्त राष्ट्र संघ का स्थायी सदस्य बनाने का विरोध किया। उपरोक्त सभी स्थितियां और कारण शीत युद्ध को बढ़ावा देने वाले कारण थे।

गुट निरपेक्षता

शीत युद्ध की इन परिस्थितियों के बीच कुछ देशों ने किसी भी गुट में शामिल न होने की नीति को चुना। युगोस्लाविया के मार्शल टीटो, मिस्त्र के नेता अब्दुल नासिर और भारत के प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने इस आन्दोलन की शुरूआत की जिसका समर्थन इन्डोनेशिया के नेता सुकार्णो तथा थाना के नेता वाने-एनक्रूमा ने किया। गुट निरपेक्षता का अर्थ पृथकतावाद, उदासीनता या तटस्थता नहीं था अपितु इसका अर्थ प्रत्येक मामले में गुण दोष के आधार पर अपनी स्वतंत्र राय व्यक्त करना तथा युद्ध को टालकर शान्ति बनाए रखना था।

1961 में बेलग्रेड में पहला गुट निरपेक्ष सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें 25 सदस्य देश शामिल हुए। इस आन्दोलन का जन्म शीत युद्ध के बढ़ते हुए दायरे तथा नव स्वतंत्र अफ्रीकी देशों के उदय के परिणाम स्वरूप हुआ। गुट निरपेक्ष आन्दोलन के सदस्य देशों ने युद्धों को टालने और विश्व शान्ति के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ को भरपूर सहयोग दिया।

नव अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था

गुट निरपेक्ष आन्दोलन में शामिल अधिकांश देश 'अल्प विकसित देश' थे और इनके सामने विकास के माध्यम से अपनी जनता को गरीबी से बाहर निकालने की चुनौती थी। अन्यथा उन्हें धनी देशों पर निर्भर रहना पड़ता जो सही अर्थों में आजादी नहीं होता।

इसी सोच के चलते 1972 में संयुक्त राष्ट्र संघ के व्यापार और विकास से सम्बन्धित 'अंकटाड' सम्मेलन में 'टुवार्डस अ न्यू ट्रेड पालिसी फार डेवेल्पमेण्ट' नाम से एक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई जिसमें निम्नलिखित सुधारों को शामिल किया गया–

(i) अल्प विकसित देशों को अपने प्राकृतिक संसाधनों पर नियन्त्रण प्राप्त होगा जिनका दोहन पश्चिम के विकसित देश करते हैं।

(ii) अल्प विकसित देशों की पहुंच पश्चिमी देशों के बाजारों तक होगी जहां वे अपना सामान/उत्पादन बेच सकेंगे।

(iii) पश्चिमी देशों से मंगाई गई प्रौद्योगिकी की लागत कम होगी।

(iv) अल्प विकसित देशों की अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संस्थानों में भूमिका को बढ़ावा दिया जाएगा।

उपरोक्त सुधारों के बाद गुटनिरपेक्षता की प्रकृति राजनीतिक मुद्दों के बजाय आर्थिक मुद्दों को महत्व देने की हो गई। यद्यपि विकसित देशों ने इन सुधारों का विरोध किया परन्तु गुट निरपेक्ष आन्दोलन ने अपनी एकता को बनाए रखा।

भारत और शीत-युद्ध

पूरे शीत युद्ध के दौरान भारत गुटनिरपेक्षता की नीति पर कायम रहा और स्वयं को दोनों महाशक्तियों की खेमेबन्दी से दूर रखा तथा बिना किसी दबाव के अंतर्राष्ट्रीय मामलों में सक्रिय हस्तक्षेप किया और अपनी राय प्रकट की। भारत का प्रयास था कि दोनों महाशक्तियों के बीच दूरी कम की जाए और विश्व युद्ध को टाला जाए।

गुट निरपेक्षता से भारत को लाभ भी हुआ। अपने हितों को ध्यान में रख कर भारत कई स्वतंत्र फैसले कर पाया। दूसरा लाभ यह हुआ कि एक महाशक्ति के नाराज होने पर वह दूसरी महाशक्ति को अपने पक्ष में लाने के लिए स्वतंत्र था। तीसरा लाभ यह हुआ कि दोनों महाशक्तियां अपने हितों के कारण भारत को अपनी धौंस में नहीं ला पाई। भारत की गुट निरपेक्षता की नीति की आलोचना भी हुई और अनेक विचारक भारत की इस नीति को सिद्धान्त विहीन और अपना हित साधने की नीति मानते हैं। आलोचक भारत के विचारों में स्थिरता नहीं पाते। कई बार भारत का व्यवहार पक्षपात पूर्ण भी दिखाई दिया। उदाहरण के लिए 1971 में (बांग्ला युद्ध के समय) भारत नेसोवियत संघ के साथ एक दीर्घकालिक मित्रता की सन्धि जो किसी एक खेमे में जाने के समान थी।

धीरे-धीरे सोवियत संघ की आक्रामक नीतियों में बदलाव आने लगा और अनेक अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं ने शीत युद्ध को शिथिल कर दिया। जर्मनी का एकीकरण और बर्लिन की दीवार का टूटना इसी कड़ी में हुआ। सोवियत संघ की आन्तरिक स्थिति का बिगड़ना और 1991 में विघटन हो जाना शीत युद्ध की समाप्ति और दो ध्रुवीयता के अन्त के संकेत थे।

पाठागत अवधारणाएं

नाटो संगठन–'उत्तरी अटलांटिक सन्धि' के अन्तर्गत एक गुट के रूप में जुड़े देश।

वारसा पैक्ट–वारसा सन्धि के अन्तर्गत एक गुट के रूप में जुड़े देश।

अपरोध–युद्ध के भयानक परिणामों को देखते हुए स्वयं को रोकना और सन्तुलन बनाए रखने को अपरोध कहा गया।

गुट निरपेक्षता–दोनो महाशक्तियों से समान दूरी बनाए रखना तथा अपनी स्वतंत्र राय रखना। किसी भी गुट में शामिल न होना।

प्रस्तावित क्रियाकलाप

1. छात्रों को विश्व मान चित्र पर नाटो के सदस्य देशों तथा वारसा पैक्ट के देशों को अलग-अलग रंग से दर्शाने तथा उनके नाम लिखने को कहा जाए।
2. छात्रों को किसी भी युद्ध के सम्भावित परिणाम लिखने को कहा जाए।

संवर्धित मूल्य–युद्धों से बचना चाहिए तथा किसी भी गुट में शामिल होने से बेहतर है कि स्वयं को स्वतंत्र रखा जाए और सक्रिय रहा जाए।

मूल्यांकन

1. शीत युद्ध के दौरान उभरी महाशक्तियों के नाम लिखिए।
2. 'गुट निरपेक्ष आन्दोलन' की स्थापना का समर्थन करने वाले दो देशों के नाम लिखिए।
3. अकटांउ का विस्तृत रूप लिखिए।
4. शीत युद्ध को परिभाषित कीजिए।

5. गुट निरपेक्षता का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
6. नाटो में सम्मिलित किन्हीं छः देशों के नाम लिखिए।
7. शीत युद्ध के कोई चार कारण स्पष्ट कीजिए।
8. क्या भारत और पाकिस्तान के बीच निरन्तर चल रहे विवाद और संघर्ष को शीत युद्ध कहा जा सकता है? अपने उत्तर के पक्ष में उपयुक्त तर्क दीजिए।

पाठ-2

दो ध्रुवीयता का अन्त

परिचय

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के बीच अविश्वास और तनाव के कारण उपजे शीत युद्ध ने दुनियां में दो खेमों को जन्म दिया। एक खेमे का नेतृत्व अमेरिका कर रहा था तो दूसरे का नेतृत्व सोवियत संघ कर रहा था। परन्तु सोवियत संघ के खेमे के देशों के लोगों में आजादी की भावना जोर पकड़ने लगी तथा लोग उस समय की व्यवस्था (सोवियत प्रणाली) से असन्तुष्ट थे।

1985 में गोर्बाचेव कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव चुने गए और 1988 में उन्होंने राष्ट्रपति पद का कार्य भार सम्भाला ओर लोगों के असन्तोष को देखते हुए कुछ सुधार लागू किए परन्तु सोवियत संघ के खेमे में शामिल गणतन्त्रों में संघर्ष तीव्रता से बढ़ता गया और 25 दिसम्बर 1991 को सोवियत राष्ट्रपति गोर्बाचेव ने त्याग-पत्र दे दिया और सोवियत संघ (नो पन्द्रह गणराज्यों का संघ था) का विघटन हो गया। एक महाशक्ति के रूप में उभरे सोवियत संघ की शक्ति बिखर गई और विश्व में दो ध्रुवीयता का अन्त हो गया। वर्तमान में रूस ही सोवियत संघ के सभी दायित्वों और सन्धियों का पालन कर रहा है तथा संयुक्त राष्ट्र संघ में स्थायी सदस्यता भी रूसी गणतन्त्र को ही प्राप्त है।

अधिगम परिणाम

1. विद्यार्थी सोवियत प्रणाली की विशेषताएं जान सकेंगे।
2. सोवियत संघ के विघटन के कारण समझ पाएंगे।
3. सोवियत संघ के विघटन के परिणामों से अवगत होंगे।
4. शॉक थेरेपी का अर्थ तथा उसके प्रभाव/परिणाम को समझ सकेंगे।
5. सोवियत संघ के विघटन के बाद भारत और रूस के सम्बन्धों को समझ सकेंगे।
6. वर्तमान विश्व व्यवस्था को जानने और समझने की उत्कंठा उत्पन्न होगी।

विषय वस्तु

1917 की रूसी क्रान्ति के बाद 'समाजवाद' के आदर्शों पर आधारित सोवियत संघ अस्तित्व में आया। सोवियत संघ की स्थापना 'पूंजीवाद' के विरूद्ध हुई थी अतः सोवियत संघ में 'निजी सम्पति' को नकारा गया और उसके स्थान 'सोवियत प्रणाली' को स्थापित किया गया। सोवियत प्रणाली एक ऐसी व्यवस्था थी जिसमें 'राज्य' को प्राथमिकता प्राप्त थी तथा 'सबके लिए समानता' के आदर्श को अपनाया गया। सोवियत संघ में कम्यूनिस्ट पार्टी के अतिरिक्त किसी अन्य पार्टी को अनुमति नहीं थी अर्थात वहां कम्यूनिस्ट पार्टी की तानाशाही थी। उत्पादन और वितरण के सभी

साधनों पर सरकार का नियन्त्रण था। इसके पास संचार का सशक्त और विस्तृत ढांचा था, लोहा-इस्पात, तेल जैसे खनिजों का अपार भण्डार था तथा यातायात के साधनों और मशीनों के उत्पादन में भी काफी सम्पन्न था। अतः सोवियत संघ एक शक्तिशाली ओर विकसित इकाई था। सोवियत संघ से जुड़े देशों को 'दूसरी दुनिया' के देश भी कहा जाता था। यहां सभी नागरिकों के लिए न्यूनतम जीवन स्तर सुनिश्चित था, शिक्षा, स्वास्थ्य, बच्चों की देखभाल तथा जीवन की अन्य जरूरते कम दरों पर उपलब्ध थीं तथा सबको काम का अधिकार प्राप्त था, परन्तु भूमि और उत्पादन के साधनों पर सरकारी नियन्त्रण था।

इतना सब कुछ होने के बावजूद भी सोवियत संघ के लोगों का जीवन स्तर पहली दुनिया (अमेरिकी खेमे से जुड़े देश) के देशों की तुलना में अच्छा नहीं था। सोवियत संघ में अफसर शाही और तानाशाही बढ़ रही थी, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं थी, लोकतन्त्र की कमी थी और भ्रष्टाचार भी बढ़ रहा था। इन सब कारणों से लोगों का जीवन कठिन हो चुका था। कहने को सोवियत संघ 15 गणराज्यों का संघ था परन्तु वास्तव में रूस का ही प्रभुत्व था। सोवियत संघ अमेरिकी खेमे का मुकाबला करने के लिए अपनी सैन्य शक्ति, परमाणु हथियारों और अन्तरिक्ष कार्यक्रमों पर खर्च करता रहा परन्तु जन-साधारण की जरूरतों पर ध्यान नहीं दिया गया।

1985 में मिखायल गोर्बाचेव कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव बने और उसने स्थिति में सुधार लाने के बारे में सोचा। परन्तु स्थिति बिगड़ती चली गई और सोवियत संघ के सदस्य पूर्वी यूरोप के देशों ने अपनी सरकारों तथा सोवियत संघ के विरूद्ध विरोध प्रकट करना शुरू कर दिया। गोबाचेव ने जिन आर्थिक और राजनीतिक सुधारों को शुरू किया था उन का कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं ने ही विरोध किया। कट्टरवादी कम्युनिस्टों ने गोर्बाचेव के सुधारों को लागू नहीं होने दिया और सोवियत संघ विघटन के कगार पर आ गया।

दिसम्बर 1991 में येल्तसिन के नेतृत्व में रूस, यूक्रेन और बेलारूस ने सोवियत संघ के टूटने के घोषणा की तथा सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी पर प्रतिबन्ध लगा दिया। विघटन के बाद संघ के कई देशों में लोकतन्त्र और पूंजीवाद को अपनाया गया। 'समाजवादी' विचारधारा की यह बहुत बड़ी हार थी।

सोवियत संघ के विघटन के कारण

यदि हम सोवियत संघ के विघटन के कारण खोजें तो निम्नलिखित कारण उभर कर आते हैं–

1. **कम्युनिस्ट पार्टी की तानाशाही**–केवल एक ही पार्टी होने के कारण पार्टी तानाशाह बनती गई और लोगों को अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता नहीं थी जिससे लोगों में असन्तोष, क्रोध और विराध बढ़ता गया।
2. **आर्थिक विफलता**–अमेरिका का मुकाबला करने के लिए भारी उद्योगों, सैनिक साजो-सामान और हथियारों पर भारी खर्च किया गया परन्तु लोगों की जरूरतों की अनदेखी की गई। जीवन जीने के लिए जरूरी चीजों की भारी कमी पैदा हो गई।
3. **पश्चिमी देशों की जीवन शैली**–सूचना तकनीकी और सूचना साधनों के विस्तार से लोगों को पश्चिम देशों के लोगों की जीवन शैली और जीवन स्तर की जानकारी प्राप्त होने लगी और वह अपनी तुलना उनसे करने लगे।
4. **सुधार लागू करने में असफलता**–गोर्बाचेव ने जिन सुधारों को लागू किया उनका अपनी ही पार्टी में विरोध हुआ और सुधार लागू नहीं हो सके।

5. **राष्ट्रवादी भावनाओं का मजबूत होना**–सोवियत संघ के विभिनन गणतन्त्रों में राष्ट्रवादी भावना निरन्तर प्रबल रही जिसके कारण संघर्ष होना अनिवार्य था। एस्तोनिया, लातविया और लिथुनिया जैसे गणतन्त्रों ने संप्रभुता की मांग की और विघटन की प्रक्रिया को तेज किया।

विघटन के परिणाम

सोवियत संघ के विघटन का सबसे बड़ा परिणाम तो यह हुआ कि शीत युद्ध का अन्त हो गया। शीत युद्ध की समाप्ति के कारण हथियारों की दौड़ और होड़ में भी कमी आई। सोवियत संघ का खेमा टूटने से नए संप्रभु देश बने। विश्व में एक ही महाशक्ति (संयुक्त राज्य अमेरिका) बच गई और विश्व एक ध्रुवीय हो गया क्योंकि दूसरे ध्रुव (सोवियत संघ) का विघटन हो गया। विश्व के एक ध्रुवीय होने तथा नए देशों के उदय से विभिन्न देशों के आपसी सम्बन्धों में बदलाव आया और नए समीकरण व नए शक्ति सन्तुलन बने।

विघटन के बाद 'शाक थेरेपी'

विघटन के बाद बने नए देशों को बदलाव के दौर से गुजरना पड़ा। 'साम्यवाद' अर्थात कम्युनिस्ट शासन के अन्त के बाद इन देशों को लोकतान्त्रिक और पूंजीवादी व्यवस्था को अपनाना पड़ा। इस संक्रमण (बदलाव) के दौर में विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की अहम भूमिका रही। विघटन के बाद बने नए देशों को पूरी तरह से पूंजीवादी व्यवस्था अपनाने, राज्य की सम्पतियों का निजीकरण करने, सामूहिक खेती को निजी खेती में बदलने और पूंजीवादी व्यवस्था को बढ़ावा देना पड़ा। इस प्रकार तानाशाह समाजवादी व्यवस्था (जो सोवियत संघ में प्रचलित थी) से लोकतान्त्रिक पूंजीवादी व्यवस्था में जाने की प्रक्रिया और मॉडल को शॉक थेरेपी कहा जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ है ''चोट पहुंचा कर इलाज करना'। नए देशों के लिए यह कष्टकारी था परन्तु उनके पास इसके सिवा कोई और रास्ता नहीं था।

शॉक थेरेपी के परिणाम

बदलाव अर्थात संक्रमण के इस दौर में हुई हलचल से निम्नलिखित परिणाम निकले–

1. बड़े-बड़े कल कारखानों और उद्योगों को निजी हाथों में सस्ते दामों पर बचना पड़ा, क्योंकि राज्य नियन्त्रण की व्यवस्था भंग हो चुकी थी। इस तरह की सस्ती सेल को इतिहास की सबसे बड़ी 'गेराज सेल' कहा गया।
2. रूसी मुद्रा 'रूबल' की कीमत गिर गई और मुद्रा स्फीति बढ़ गई जिससे लोगों की पूरी 'बचत' समाप्त हो गई।
3. सामूहिक खेती व्यवस्था समाप्त हो गई और लोगों के लिए 'खाद्य सुरक्षा' नहीं रही। रूस को खाद्य सामग्री का आयात करना पड़ा।
4. सामाजिक कल्याण की पुरानी व्यवस्था भंग हो गई तथा मध्यम वर्ग हाशिये पर आ गया। आर्थिक समानता की बजाय आर्थिक असमानता पैदा हुई।
5. नए निर्मित देशों में लोकतन्त्र को मजबूत करने पर ध्यान नहीं दिया गया। सभी नए देशों के संविधान जल्दबाजी में तैयार किए गए जिनमें राष्ट्रपति को अधिकाधिक शक्तियां दी गईं। अभी भी विरोध करने या असहमत होने की खुली स्वतंत्रता नहीं दी गई।

6. नए देशों के बनने से देशों की कुल संख्या बढ़ी और संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्यों की संख्या भी बढ़ी
7. सोवियत संघ की विरासत रूस को प्राप्त हुई। रूस को ही संयुक्त राष्ट्र संघ का स्थायी सदस्य माना गया तथा सोवियत संघ द्वारा किए गए समझौतों और सन्धियों को रूस द्वारा किया गया माना गया। गोर्बाचेव के बाद ब्लादीमिर पुतिन रूस के नए राष्ट्रपति बने।

विघटन के बाद के तनाव और संघर्ष

सोवियत संघ के विघटन के बाद सभी नए देशों में तनाव और संघर्ष की स्थिति पैदा हुए। उत्पादन में गिरावट आई और बेरोजगारी बढ़ी। कुछ देशों में अलगाववादी आन्दोलन भी शुरू हुए। कुछ प्रमुख संघर्षों की नीचे दिया गया है–

1. चेचेन्या और दागिस्तान में हिंसक अलगाववादी आन्दोलन हुए जिन्हें रूस ने पूरी ताकत से दबाया परन्तु लोगों के भीतर आजादी की भावना को नहीं दबाया जा सका
2. ताज़िकस्तान में गृह युद्ध हुआ और दस बरसों तक सरकार ओर विद्रोहियों के बीच संघर्ष चलता रहा।
3. अजरबाईजान में आर्मेनिया के लोग आर्मेनिया में शामिल होने के लिए संघर्ष कर रहे थे तो जार्जिया के दो प्रान्तों में आजादी के लिए गृह युद्ध हुआ। यूक्रेन और किरगिस्तान में भी तत्कालीन सरकारों के विरुद्ध आन्दोलन हुए जिससे अस्थिरता को बढ़ावा मिला।
4. पूर्वी यूरोप के अन्य कम्युनिस्ट देशों में भी संघर्ष हुए। 1989 में चेकोस्लवाकिया में कम्युनिस्ट सरकार का तख्ता पलट दिया गया जिसके परिणाम स्वरूप 'चेक गणराज्य' और 'स्लोवाक गणराज्य' नाम से दो नए देश बने। इसी प्रकार कम्युनिस्ट देश युगोस्लाविया में जातीय और मजहबी संघर्ष हुआ और युगोस्लाविया देश के स्थान पर 'सर्बिया और मांटेनेग्रो' नामक नया देश बन गया। यह घटनाएं कम्युनिज़्म अर्थात 'साम्यवाद' के घटते प्रभाव का परिणाम थीं।

विघटन उपरान्त भारत और रूस के सम्बन्ध

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही भारत और सोवियत संघ के सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण रहे हैं। सोवियत संघ से ही प्रेरित होकर भारत ने 'नियोजित विकास' के माडल को अपनाया आपसी सहयोग के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं–

1. भिलाई, रांची ओर बोकारो में इस्पात के कारखाने लगाने में सोवियत संघ ने आर्थिक सहायता तथा जरूरी मशीनें प्रदान की।
2. कश्मीर पर जनमत संग्रह के मामले पर सोवियत संघ ने संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद में भारत के पक्ष में वीटो शक्ति का प्रयोग किया।
3. भारत रूस से सैनिक हथियार तथा तेल का आयात करता है।
4. दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और शैक्षणिक योगदान रहा है।
5. परमाणु ऊर्जा एवं अन्तरिक्ष के मामलों में सोवियत संघ भारत की सहायता करता रहा है

विघटन के बाद भारत और रूस के सम्बन्ध

विघटन के बाद भी भारत ने नव उदित देशों तथा रूस के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखे। रूस और भारत, दोनों

ही बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की परिकल्पना करते हैं जिसमें अनेक शक्तियां सामूहिक सुरक्षा के अन्तर्गत सह अस्तित्व की भावना से रह सकते हैं। दोनों देशों के नेता एक दूसरे की यात्राएं करते रहते हैं। रूस के राष्ट्रपति पुतिन भारत की यात्रा कर चुके हैं और दोनों देशों के बीच आपसी सहयोग और रक्षा सौदों को लेकर समझौते हुए हैं। एशिया में चीन की बढ़ती शक्ति को रोकने के लिए भी भारत और रूस का निकट आना 'शक्ति संतुलन' की दृष्टि से अनिवार्य है। भारत अमेरिका के सम्बन्धों में सुधार और मजबूती का रूस के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों पर कोई प्रभाव नहीं हुआ है।

पाठागत अवधारणाएं

सोवियत प्रणाली–सोवित संघ में प्रचलित तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था को सोवियत प्रणाली कहा जाता है।

तानाशाही–ऐसी व्यवस्था जहां एक व्यक्ति, एक दल अथवा एक विचारधारा का प्रभुत्व हो तथा किसी को उसका विरोध करने की अनुमति न हो।

दूसरी दुनियां–सोवियत संघ एवं उसके खेमे से जुड़े देशों को दूसरी दुनियां के नाम से जाना जाता है।

तीसरी दुनिया–दोनों खेमों से अलग विकासशील तथा अल्प विकसित देशों को तीसरी दुनिया कहा जाता है। जैसे भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका इत्यादि

कम्युनिस्ट पार्टी–सोवियत संघ में शासन कर रही पार्टी जिसकी विचारधारा असमानता को मिटा कर समाजवाद लाना, पूंजीवाद का विरोध करना तथा उत्पादन और वितरण के साधनों पर सरकार का नियन्त्रण रखना था।

गणराज्य–ऐसे देश जिनका मुखिया/राष्ट्रपति चुनाव से चुना जाता हो।

शॉक थेरेपी–रूस, केन्द्रीय एशिय और पूर्वी यूरोप के देशों में तानाशाही समाजवादी व्यवस्था से लोकतान्त्रिक पूंजीवादी व्यवस्था में बदले जाने की प्रक्रिया को शॉक थेरेपी कहते हैं।

गेराज सेल–किसी गेराज में एकत्र हुए बेकार पुर्जों और कबाड़ की सेल को गेराज सेल कहा जाता है। शॉक थेरेपी के कारण सोवियत संघ के कई देशों में सरकारी नियन्त्रण के कारखानों को निजी हाथों में बहुत सस्ती दरों पर बेचना भी गेराज सेल कहलाया।

प्रस्तावित क्रियाकलाप

1. सोवियत संघ में प्रचलित सोवियत प्रणाली के बावजूद विघटन के कारणों को दर्शाती हुए एक लघु नाटिका (समय 10 मिनिट) प्रस्तुत करने के लिए कक्षा के छात्रो को सहयोग देकर प्रेरित किया जाना चाहिए। छात्र स्वयं विभिन्न पात्र निर्मित करके उनके संवाद लिखें जिससे सोवियत प्रणाली एवं विघटन के कारण स्पष्ट हो सकें।
2. छात्रों को विघटन के बाद हुए संघर्षों एवं तनावों को दर्शाते हुए चार्ट बनाने के लिए प्रेरित करना

मूल्यांकन– (अति लघु उत्तर प्रश्न)

1. सोवियत प्रणाली की कोई एक विशेषता लिखिए।

2. सोवियत संघ में विघटन के समय राष्ट्रपति कौन था?
3. सवियत संघ के अतिरिक्त किन्हीं दो कम्युनिस्ट देशों के नाम लिखिए।

लघु उत्तर प्रश्न

4. सोवियत प्रणाली की व्याख्या कीजिए।
5. शॉक थेरेपी का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ उत्तर प्रश्न

6. सोवियत संघ के विघटन के कोई चार कारण लिखिए।
7. सोवियत संघ के विघटन के कोई चार प्रभाव लिखिए।

निबन्धात्मक उत्तर प्रश्न–

8. सोवियत संघ और भारत के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की समीक्षा कीजिए।

पाठ-3

अमेरिका वर्चस्व का दौर

परिचय

1991 में सोवियत संघ का विघटन हो गया और एक महाशक्ति के रूप में सोवियत संघ का अस्तित्व समाप्त हो गया। सोवियत संघ के सदस्य देश बिखर गए और सोवियत की विरासत रूस को मिल गई। विश्व एक ध्रुवीय हो गया और केवल अमेरिका ही सबसे बड़ी शक्ति के रूप में अपने दबदबे को बनाए रख सका। इस दौरान कई परिवर्तन हुए। साम्यवाद कमजोर पड़ा। बर्लिन की दीवार तोड़ दी गई और जर्मनी का एकीकरण हुआ। अमेरिका इतनी बड़ी शक्ति के रूप में उभरा कि कोई अन्य देश उसकी शक्ति को चुनौती नहीं दे सकता था। इस अवस्था को ''नई विश्व व्यवस्था'' का नाम दिया गया जब विश्व एक ध्रुवीय (अर्थात एक महाशक्ति) बन गया। इस स्थिति को अमेरिकी वर्चस्व का दौर भी कहा जाता है।

अधिगम परिणाम

इस पाठ के अध्ययन के बाद विद्यार्थी

1. वर्चस्व का अर्थ समझ सकेंगे।
2. अमेरिकी वर्चस्व के कारण जान पाएंगे।
3. अमेरिकी वर्चस्व के मुख्य पक्षों को समझ सकेंगे।
4. अमेरिकी वर्चस्व से मुकाबला करने की स्थितियों की कल्पना कर सकेंगे।

विषय वस्तु

सोवियत संघ के विघटन से पूरा विश्व चकित था क्योंकि वैश्विक परिदृश्य से एक महाशक्ति का लोप हो गया था। इन्हीं दिनों (1990) में इराक ने कुवैत पर आक्रमण कर उसे अपने कब्जे में ले लिया था। अमेरिका ने कुवैत को इराकी कब्जे से मुक्त करवाने के लिए संयुक्त राष्ट्र की सहमति प्राप्त करे 34 देशों की संयुक्त सेना का नेतृत्व किया और इराक को हरा कर कुवैत को मुक्त करवा लिया।

राष्ट्रपति बुश के कार्यकाल में हुई इस कार्रवाई को पहला खाड़ी युद्ध अथवा ''आप्रेशन उेजर्ट स्टार्म'' भी कहते हैं। कहने को भले ही इसमें 34 देशों की सेनाएं शामिल थी परन्तु मूलतः यह अमेरिकी आक्रमण ही था इस युद्ध के दौरान पूरी दुनिया ने अमेरिकी ताकत को देखा। इराक के दबंग तानाशाह सद्दाम हुसैन ने 28 फरवरी 1991 को कुवैत से अपनी सेनाएं हटा लीं। यद्यपि युद्ध फरवरी में सपाप्त हो गया परन्तु इराक पर लगे प्रतिबन्ध कई वर्षों तक जारी रही। इस युद्ध को लोगों ने अपने घरों में बैठकर टी.वी. देखा। यह पहली बार हुआ था अतः इस युद्ध को 'कंप्यूटर

बार' भी कहा जाता है। इस युद्ध में प्रदर्शित शक्ति के कारण पूरे विश्व ने अमेरिकी वर्चस्व को स्वीकार किया।

वर्चस्व का अर्थ–वर्चस्व का शाब्दिक अर्थ सबसे बड़ी ताकत का दबदबा होना है। अमेरिका का वर्चस्व उसकी सैन्य शक्ति, आर्थिक प्रभुत्व, ढांचागत ताकत तथा सांस्कृतिक और वैचारिक शक्ति और दबदबे के कारण माना जाता है। अमेरिका का विरोध कर पाना आज किसी भी देश के लिए कठिन है क्योंकि उससे मुकाबला करने की ताकत किसी देश के पास नहीं है।

बुश के बाद क्लिंटन के शासन काल में हुई सैनिक कार्रवाईयां

जार्ज बुश की नीतियों से असन्तुष्ट अमेरिकियों ने 1992 में बुश के स्थान पर बिल क्लिंटन को राष्ट्रपति निर्वाचित किया। राष्ट्रपति क्लिंटन ने घरेलू मुद्दों पर अधिक ध्यान दिया तथा विश्व में लोकतन्त्र को बढ़ावा देने, जलवायु परिवर्तन तथा विश्व व्यापार के मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित किया और सैन्य शक्ति के प्रर्दशन पर कम ध्यान दिया। परन्तु जब कभी सैन्य शक्ति के प्रयोग की ज़रूरत पड़ी तब तत्परता से कार्रवाई की।

1998 में युगोस्लाविया द्वारा अपने ही प्रान्त कोसोवो में अल्बानियाई लोगों को दबाने के लिए सेना का प्रयोग किया गया तो अल्बानियाई लोगों की सहायता के लिए अमेरिकी नेतृत्व में नाटों की सेना ने कोसोवो पर कब्जा कर लिया और युगोस्लविया कुछ नहीं कर पाया।

1998 में ही तंजानिया में अमेरिकी दूतावासों पर आतंकवादी संगठनों ने बमबारी की तो अमेरिका ने आतंकवादी संगठन 'अल कायदा' को कुचलने के लिए उनके ठिकानों पर मिसाइलों से आक्रमण किया। इस कार्रवाई के लिए अमेरिका ने संयुक्त राष्ट्र संघ की परवाह भी नहीं की और कई नागरिक बस्तियों को भी निशाना बनाया। इस कार्रवाई 'आपरेशन इनफाइनाइट रीच' के बाद अमेरिका का वर्चस्व स्पष्ट दिखाई देने लगा।

आतंकवादियों ने 11 सितम्बर 2000 को अमेरिकी विमानों का अपहरण कर न्यूयार्क के विश्व व्यापार केन्द्र के दो टावरों तथा वाशिंगटन में पेंटागन से टकराकर खुली चुनौती दी जिसमें हजारों लोग मारे गए। अमेरिका ने जान माल की इतनी बड़ी हानि पहले कभी नहीं देखी थी। यह घटना 9/11 के नाम से भी जानी जाती है जिसका अर्थ नौवे महीने की ग्यारह तारीख है। इसका बदला लेने के लिए राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यू बुश ने आतंकवाद के लिए दोषी अफगानिस्तान की तालिबानी सरकार पर हमला किया और इस कर्रवाई को आप्रेशन एन्डयूटिंग फ्रीडम का नाम दिया। अक्तूबर 2001 में हुए इस आक्रमण का अंत दिसम्बर 2001 में तालिबानी शासन के अंत के साथ हुआ। अमेरिकी सैनिक अफगानिस्तान में बने रहे और तालिबानों के साथ निरन्तर संघर्ष करते रहे। 2 मई 2011 को अल कायदा के सरगना ओसामा–बिन–लादेन को अमेरिका ने पाकिस्तान में मार गिराया।

अमेरिका इराक के शासक सद्दाम हुसैन को कभी पसन्द नहीं करता था और उस पर यह आरोप लगाया जाता था कि उसने सामूहिक संहार के शस्त्र एकत्र कर रखे हैं जिनका प्रयोग मानवता के विरूद्ध किया जा सकता है। इसी आशंका के चलते 2003 में अमेरिका ने 40 देशों के सहयोग से इराक के विरूद्ध 'आप्रेशन इराकी फ्रीडम' कार्रवाई की और सद्दाम हुसैन को जिन्दा पकड़ कर उस पर मुकद्मा चलाया और सरे आम फांसी पर लटका कर मृत्यु दण्ड दिया गया। यद्यपि अमेरिका ने इराक पर अधिकार कर लिया था परन्तु अमेरिका को इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। लगभग 3000 अमेरिकी सैनिक मारे गए और इराक के पास सामूहिक संहार के कोई शस्त्र भी नहीं मिले। यह युद्ध सैनिक और राजनीतिक दृष्टि से अमेरिका के लिए हितकर सिद्ध नहीं हुआ।

अमेरिकी वर्चस्व के आयाम

जैसा कि पहले कहा गया है कि अमेरिका का वर्चस्व बहुमुखी था। राजनीतिक विचारकों का मानना है कि अमेरिका को सैन्य शक्ति, आर्थिक और ढांचागत शक्ति तथा सांस्कृतिक प्रभुत्व के रूप में वर्चस्व है हम इन तीनों आयामों का अलग-अलग अध्ययन करेंगे।

1. **सैन्य शक्ति के रूप में वर्चस्व**–अमेरिका की सैन्य शक्ति अपार है। वह अपनी सेनाओं पर जितना खर्च करता है, दुनियां के 12 शक्तिशाली देश मिलकर भी उतना खर्च नहीं करते। वर्तमान में अमेरिका का सैन्य बजट लगभग 600 अरब डालर है। वह अपनी सैन्य शक्ति के बल पर पूरी दुनिया में कहीं भी निशाना साध सकता है। सैन्य प्रोद्योगिकी के मामले में अमेरिका बेजोड़ है। यद्यपि अमेरिका द्वारा इराक पर की गई कार्रवाई 'आप्रेशन इराकी फ्रीडम को पूर्णत: सफल नहीं माना जाता है तब भी दो बातें स्पष्ट हैं कि अमेरिका की मारक शक्ति विकट है और अपनी मर्जी से किसी को भी दण्डित करने में समर्थ है। हां–इराक में वह अपने अधिकृत क्षेत्र में कानून व्यवस्था को ठीक से नहीं बनाए रख पाया।
2. **ढांचागत वर्चस्व**–अमेरिका दुनिया का ऐसा बड़ा देश है जो वैश्विक अर्थव्यवस्था को अपनी मर्जी के अनुसार चलाने के लिए कुछ ऐसी चीजे़ बनाता है जिनका प्रयोग अमेरिका के साथ-साथ अन्य देश भी करते हैं। जैसे अमेरिका द्वारा निर्मित समुद्री व्यापार मार्ग (सी लेन आव कम्युनिकेशन्स SLOCS) जिनका प्रयोग अन्य देश करते हैं?

अपनी नौ सेना के बल पर अमेरिका इन आवाजाही के मार्गों के नियम तय करता है। इसी प्रकार अमेरिका द्वारा विकसित इन्टरनेट के माध्यम से वर्ल्ड वाइड वेव का काल्पनिक संसार साकार हो गया है। आज सारी दुनिया इन्टरनेट का उपयोग कर रही है। ऐसी वस्तुओं को 'सार्वजनिक वस्तुएं' कहा जाता है। सार्वजनिक वस्तु ऐसी चीज़ को कहा जाता है जिसका उपयोग कोई एक व्यक्ति करे तो दूसरे उपभोक्ता के लिए इसकी कमी न आए। ऐसी वस्तुओं में स्वच्छ वायु, सड़कें, इन्टरनेट इत्यादि को शामिल किया जाता है। इस क्षेत्र में अमेरिका का दबदबा है और अधिकांश देश अमेरिका के उपग्रहों इत्यादि पर निर्भर करते हैं।

इसके अतिरिक्त अमेरिका की विश्व व्यापार में 15% की हिस्सेदारी है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं हैं जिसमें कोई अमेरिकी कम्पनी अग्रणी तीन कम्पनियों में से एक नहीं हो। अमेरिका द्वारा स्थापित ब्रेटन बुड प्रणाली आज भी विश्व की अर्थव्यवस्था की बुनियादी संरचना का काम कर रही है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी एम. बी. ए. की अकादमिक डिग्री उसकी ढांचागत ताकत को दर्शाती है। अमेरिका में पहला बिजनेस स्कूल खुला और अमेरिका ने ही 'व्यवसाय' को एक कौशल के रूप में सीखने के लिए एमबीए के पाठ्यक्रम की शुरूआत की। इन संस्थानों को उच्चतम ढांचागत सुविधाएं प्राप्त हैं और दुनियां भर से छात्र/छात्राएं यहां पढ़ने के लिए आते हैं। उपरोक्त क्षमता और ताकत के आधार पर अमेरिका का विश्व के आर्थिक क्षेत्र और ढांचागत सुविधाओं के क्षेत्र में दबदबा है और सारी इस वर्चस्व को मानती है।

सांस्कृतिक वर्चस्व

आज पूरी दुनियां में अमेरिकी लोगों की पसन्द की विचारधारा को प्रभुत्व प्राप्त है। लोकतन्त्र और आर्थिक उदारवाद जैसे मूल्यों को विश्व में अपनाया जा रहा है। सोवियत संघ के विघटन के बाद से ही लोकतान्त्रिक उदारवादी अर्थ

व्यवस्था का प्रसार हुआ। खान-पान और पहनावे के क्षेत्र में भी दुनिया अमेरिका की नकल कर रही है। पेपसी, मेकडानल्ड और पिजाहट दुनियां भर के बाजारों पर कब्जा जमाए बैठे हैं। अमेरिकी परिधान और जीन्स, हालीवुड की फिल्में और संगीत आज दुनियां भर में लोकप्रिय हैं।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि अमेरिका का वर्चस्व स्थापित करने में अमेरिकी विचारधारा और संस्कृति का योगदान भी कोई कम नहीं है। उपरोक्त तीन कारणों से अमेरिका का पूरे विश्व में वर्चस्व है और सभी अमेरिकी दबदबे को मानते हैं।

अमेरीकी वर्चस्व को रोने वाले कारक या अवरोध

यह सोचना गलत होगा कि अमेरिकी वर्चस्व को नियन्त्रित करने वाले कारक नहीं है। यही कारक वर्चस्व के रास्ते में अवरोध कहलाते हैं।

अमेरिकी वर्चस्व के रास्ते में पहला अवरोध अमेरिका की शासन व्यवस्था है जहां सरकार के तीनों अंगों विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच शक्यिों का बंटवारा है और तीनों अंग एक दूसरे पर लगाम लगाते हैं और निरकुंश होने से रोकते हैं।

अमेरिकी वर्चस्व के रास्ते में दूसरा अवरोध स्वयं अमेरिकी लोग हैं जो अपने स्वभाव से उन्मुक्त हैं और अपनी स्पष्ट राय रखने में संकोच नहीं करते। अमेरिकी लोग अपने शासकों पर जन संचार के माध्यमों से नियन्त्रण रखते हैं।

अमेरिकी वर्चस्व के रास्ते में तीसरा बड़ा अवरोध स्वयं अमेरिका और इसके मित्र राष्ट्र हैं। नाटों में शामिल अनेक यूरोपीय देश भी अपनी शक्ति को बढ़ाने का प्रयास करते रहते हैं और ऐसा प्रयास अमेरिकी वर्चस्व को नियन्त्रण में रखता है।

अमेरिका से भारत के सम्बन्ध

शीत युद्ध के वर्षों में भारत और अमेरिका के बीच सम्बन्ध बहुत अच्छे और मैत्रीपूर्ण नहीं थे क्योंकि सोवियत संघ से भारत के निकटतापूर्ण सम्बन्ध अमेरिका को रास नहीं आते थे परन्तु सोवियत संघ के विघटन के साथ ही सम्बन्धों में परिवर्तन का दौर शुरू हुआ और अमेरिका–भारत के बीच सम्बन्धों में सुधार हुआ है। दोनों देश के बीच बढ़ती दोस्ती का सम्बन्ध प्रौद्योगिकी और अमेरिका में बसे अनिवासी भारतीयों से हैं। जैसे अमेरिका की सिलिकन वैली में 3 लाख भारतीय कार्य कर रहे हैं

- सॉफ्टवेयर के निर्यात का 65% अमेरिका को निर्यात किया जाता है।
- बोईन के 35% कर्मचारी भारतीय मूल के हैं
- उच्च प्रौद्योगिकी के क्षेत्र की 15% कम्पनियों की शुरूआत अमेरिका में बसे भारतीयों ने की है।

इस पाठ के अध्ययन के बाद स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न उठता है कि अमेरिका के वर्चस्व से कैसे निपट सकते हैं।

1. निश्चित रूप से भातर, रूस और चीन–जैसे बड़े देश मिल कर अमेरिका के वर्चस्व को चुनौती दे सकते हैं–परन्तु तीनों में कई प्रकार के मतभेद है इसलिए यह सम्भावना क्षीण हो जाती है।

2. एक अन्य विकल्प यह है कि अमेरिका से यथा सम्भव दूर रहा जाए अर्थात स्वयं को अमेरिका से छुपा कर रखा जाए। लेकिन ऐसा केवल बहुत छोटे देश ही कर सकते हैं और बड़े देश स्वयं को छुपा कर नहीं रख सकते।
3. एक अन्य विचारानुसार अमेरिका के वर्चस्व को चुनौती स्वयंसेवी संगठनों, सामाजिक आन्दोलनों और जनमत से मिलेगी। ऐसा सम्भव है कि विश्व के बुद्धिजीवी, मीडिया के लोग, कलाकार और लेखक अमेरिकी वर्चस्व के प्रतिरोध में सामने आएं और वर्चस्व को चुनौती दें।

वैश्वीकरण के इस युग में आपसी सहयोग और प्रबल जनमत ही चुनौती के रूप में उभर सकता है।

प्रमुख अवधारणाएं

वर्चस्व–पूरी ताकत के साथ निरन्तर हावी रहने की स्थिति को वर्चस्व कहते हैं।

नयी विश्व व्यवस्था–शीत युद्ध की समाप्ति और सोवियत संघ के विघटन के बाद संसार की राजनीति को संचालित और नियन्त्रित करने में अमेरिका का एकल शक्ति के रूप में उभरना 'नयी विश्व व्यवस्था' कहलाता है।

कम्प्युटर युद्ध–पहले खाड़ी युद्ध को अमेरिका ने जीवन्त दिखलाया था और दुनियां भर के लोगों ने इस युद्ध को अपने घर बैठ कर टीवी पर देखा। इसलिए इस युद्ध को कंप्यूटर युद्ध का नाम दिया गया।

9/11–अमेरिका में तिथि लिखने में पहले महीना ओर बाद में तारीख लिखी जाती हैं। इसलिए 9/11 का अर्थ है सितम्बर मास की ग्यारह तारीख।

आतंकवाद–जब कुछ लोग या लोगों का समूह किसी अन्य देश के लोगों में अपनी सोच या विचारधारा के प्रचार प्रसार अथवा अपने हित के लिए हिंसक गतिविधियां चला कर आतंक का वातावरण पैदा किया जाता है तो उसे आतंकवाद कहते हैं।

क्रियाकलाप

1. आप अपने दस रिश्तेदारों/मित्रों से मिल कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए सर्वेक्षण करें और इस सर्वेक्षण के प्राप्त परिणाम को एक रिपोर्ट के रूप में प्रस्तुत करें–(उत्तर एक वाक्य में होना चाहिए)
   1. आप किस देश को विश्व की सबसे बड़ी शक्ति मानते हैं?
   2. आप इस देश को सबसे बड़ी शक्ति मानने का कोई एक कारण लिखे।
   3. आप इस शक्ति को किस चीज़ से खतरा मानते है?
   4. क्या आप किसी तीसरे विश्व युद्ध का कोई कारण देखते हैं? कारण लिखिए।
   5. क्या भारत इस शक्ति को मात दे सकता है? उत्तर के पक्ष एक तर्क दीजिए।
2. अमेरिका द्वारा शीत युद्ध के बाद की गई सैनिक कार्रवाईयों की सूची निम्नलिखित प्रपत्र अनुसार बनाइये।

अमेरिका द्वारा की गई कार्रवाई	कार्रवाई किस देश देश के विरूद्ध की गई	क्या अमेरिका ने अन्य मित्रों का सहयोग लिया या नहीं	युद्ध का परिणाम

संवर्द्धित मूल्य

- निरकुंशता वर्चस्व स्थापित नहीं कर सकती
- जनमत वर्चस्व को भी चुनौती दे सकता है।

मूल्याकंन

1. वर्चस्व का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
2. पहले खाड़ी युद्ध को किस अन्य नाम से जाना जाता है?
3. किस युद्ध को कम्प्यूटर युद्ध कहा जाता है।
4. 'आप्रेशन इराकी फ्रीडम' किस देश के विरूद्ध था?
5. बैंडवैगन रणनीति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
6. नई विश्व व्यवस्था से क्या अभिप्राय है? व्याख्या कीजिए।
7. भारत और अमेरिका के बीच सम्बन्धों की चार बिन्दुओं में व्याख्या कीजिए।
8. अमरीका के वर्चस्व को चुनौती देने वाले चार कारकों को उजागर कीजिए।
9. वर्तमान एक ध्रुवीय विश्व में अमरीकी वर्चस्व के कारणों का विश्लेषण कीजिए।

पाठ-4

वैश्वीकरण

वैश्वीकरण एक विखव्यापी पारस्परिक जुड़ाव के रूप में वैश्वीकरण एक लम्बे समय से चलने वाली प्रक्रिया रही है। लेकिन 1990 के दशक में समाजवादी सोवियत संघ के विघटन के पश्चात वैश्वीकरण की गति तेज हो गयी तथा इसे अमेरिकी पूँजीवादी विचारधारा की विजय के रूप में देखा गया। कई लोग वैश्वीकरण को मात्र आर्थिक जीवन को प्रभावित करने वाली प्रक्रिया के रूप में देखते है लेकिन ऐसा नहीं है। वैश्वीकरण विश्व राजनीति एवं संस्कृति को भी प्रभावित करता है। इस तरह देखा जाय तो यह एक बहुआयामी अवधारणा है जो समकालीन विश्व में लोगों के जीवन को अनेक प्रकार से प्रभावित कर रही है। इस पाठ में हम वैश्वीकरण की अवधारणा को समझने के साथ-साथ इसको बढ़ावा देने वाले कारकों तथा इसके प्रभावों पर विस्तारपूर्वक चर्चा करेगें। हम वैश्वीकरण को भारतीय संदर्भ में भी समझने को प्रयास करेगें।

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात छात्र

- वैश्वीकरण उदारीकरण, निजीकरण जैसी अवधारणाओं से अवगत होगें।
- वैश्वीकरण को बढ़ावा देने वाले कारकों को समझने में सक्षम होगे।
- वैश्वीकरण के सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों से अवगत होगे।
- वैश्वीकरण को भारतीय संदर्भ में समझ सकेंगे।

वैश्वीकरण की अवधारणा

भारत जैसे विकासशील देश के महानगरों की सड़कों पर दौड़ती गाड़ियाँ जापान, अमेरिका या यूरोपीय देशों में चलने वाली गाड़ियों जैसी ही है। या जो मोबाइल फोन आज हमारे देश में प्रयोग हो रहे है वे विश्व के अन्य कोनों में भी इस्तेमाल हो रहे है। या हॉलीवुड या वालीवुड की फिल्मों एक साथ दुनिया भर के कई सिनेमाघरों या मल्टीप्लेक्स में लोगों का मनोरंजन कर रही है। इस रूप में देखें तो वैश्वीकरण विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्थाओं को एक दूसरे से या विश्व अर्थव्यवस्था से जोड़ रहा है।

अपने वर्तमान रूप में वैश्वीकरण (Globalisation) शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम समाजशास्त्री ऐंथनी गिडेन द्वारा किया गया था। साधारणतया वैश्वीकरण को ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जता है जिसमें देश की अर्थव्यवस्था विश्व अर्थव्यवस्था से जुड़ जाती है जिसके परिणामस्वरूप शब्दों के बीच विचारों वस्तुओं, सेवाओं पूँजी और श्रम का प्रवाह स्वतंत्र रूप से होने लगता है। यदि हम इस परिभाषा के हिसाब से देखे तो वस्तुओं, सेवाओं और पूँजी का प्रवाह तो स्पष्ट नजर आता है लेकिन श्रम प्रवाह के मार्ग में अनेक बाधायें हैं जो कि मुख्य रूप से विकसित

विश्व द्वारा पैदा की गई है। जबकि हमारे जैसे देशों को सबसे अधिक लाभ श्रम प्रवाह से हो सकता है।

वैश्वीकरण बिना उदारीकरण और निजीकरण के सम्भव नहीं है। उदारीकरण के अन्तर्गत देश के अन्दर निजी क्षेत्र के लिये उद्यम चलाना व व्यापार करना आसान किया जाता है, सरकारी नियंत्रण में कमी की जाती है जैसे भारत में लाइसेंस और परमिट राज को समाप्त करके किया गया। इसके साथ ही साथ निजीकरण की प्रक्रिया भी चलती है जिसके द्वार सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में सरकार विनिवेश करती है अर्थात उन्हें निजी हाथों में बेच देती है। इन तीनों प्रक्रियों को L. P. G अर्थात Liberalisation Privalisation Globalisation (उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण) कहा जाता है। उदारीकरण और निजीकरण के द्वारा देश के अन्दर वैश्वीकरण के लिये अनुकूल परिस्थितियां पैदा की जाती है।

वैश्वीकरण के कारण

विश्व के देशों के बीच विचारो, वस्तुओं पूँजी का प्रवाह कोई नई बात नही है। सैकड़ों वर्ष पहले चीनी सिल्क, छपाई की कला व नूडलस तथा भारतीय मसाले व वस्त्र कई देशों के लोगों के जीवन का हिस्सा बन गये थे तो दूसरी तरफ पश्चिमी देशों के खाद्य पदार्थ, परिधान कब हमारे जीवन का हिस्सा बन गये यह निश्चित रूप से कहना मुश्किल है। लेकिन समकालीन वैश्वीकरण इससे पहले के आदान-प्रदान और विश्वव्यापी जुड़ाव से इस रूप में भिन्न है कि इसके अन्तर्गत प्रवाहों की गति तथा प्रसार का धरातल अर्थात उसकी पहुँच (Reech) इसे अनूठा बनाती है।

वैश्वीकरण को बढ़ावा देने वाले कारक निम्नलिखित है–

- प्रौद्योगिकी–वैश्वीकरण का जो रूप आज देखने को मिलता है उसमें टेक्नोलॉजी के विकास का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इससे परिवहन और संचार इतना तेज हो गया कि भौगोलिक दूरियाँ अर्थहीन हो गयी। विश्व-व्यापी वेब तथा संचार के आधुनिक साधनों के द्वारा विचारों, वस्तुओं, सेवाओं व पूँजी के प्रवाह को तीव्र कर दिया।
- विश्वव्यापी समस्यायें–आतंकवाद, सूनामी व एड्स बर्ड और फ्लू जैसी बीमारियाँ किसी एक राष्ट्र की सीमा तक नहीं सिमटी है। ये पूरे विश्व को प्रभावित करती है इसके साथ-साथ पर्यावरण प्रदूषण व ग्लोबल वार्मिंग को समस्या भी विश्व के देशों और विविध समाजों के बीच जुड़ाव में योगदान दे रही है।
- वैकल्पिक विचारधारा का कमजोर पड़ना–सोवियत संघ के विघटन के पश्चात समाजवादी विचारधारा कमजोर पड़ गयी तथा वैश्वीकरण के रूप में पश्चिमी उदार पूँजीवादी विचारधारा तीव्र गति से फैलने लगी।
- अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों व विश्व व्यापार संगठन की भूमिका–समकालीन वैश्वीकरण अन्तराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक तथा विश्व व्यापार संगठन की नीतियों का परिणाम है 1947 में GATT (General Agreement On Trade an Tariff) से लेकर 1 जनवरी 1995 में विश्व व्यापार संगठन (World trade Organistion) की स्थापना तक विश्व में मुक्त व्यापार की दिशा में प्रयास चल रहे थे।
- रोनाल्ड रीगन (1981-1989) तथा मारग्रेट थैचर (1979-1990) द्वारा उदारीकरण और वैश्वीकरण के वर्तमान रूप को दुनियाभर में फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गयी। इसे Reagonisn and thacherism के नाम से जाना जाता है।

वैश्वीकरण के प्रभाव–वैश्वीकरण के राजनीतिक आर्थिक व सांस्कृतिक प्रभाव स्पष्ट नजर आते है। इसके द्वारा हम वैश्वीकरण के सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष को सही ढंग से समझ सकेंगे।

1. राजनीतिक प्रभाव

वैश्वीकरण राज्य की सम्प्रभुत्ता को किस प्रकार प्रभावित करता है? इस पर दो परस्पर विरोधी विचार है। विचारकों के एक समूह का मानना है कि वैश्वीकरण का राज्य की सम्प्रभुत्ता पर बुरा प्रभाव पड़ता है अर्थात वैश्वीकरण राज्य की अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने की क्षमता को कम कर देता है। यहाँ तक कि लोक कल्याणकारी राज्य का स्थान अहस्तक्षेपी राज्य ले लेता है।

जबकि दूसरे पक्ष का मानना है कि राज्य की क्षमता कम होने की बजाय बढ़ी है। राज्य आधुनिक प्रोद्योगिकी की सहायता से अपने समाज और नागरिकों के विषय में ज्यादा सूचनायें जुटाने में सक्षम है जो नीति निर्माण व कारगर ढंग से शासन प्रशासन चलाने में सहायक है।

इसके अलावा कानून ओर व्यवस्था बनाये रखने तथा राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे अनिवार्य कार्य हमेशा की तरह राज्य करता है राज्य अपनी इच्छा से अपने कार्य क्षेत्र को बदल रहे है या संकुचित कर रहे है। लेकिन इस सब के बावजूद इतना स्पष्ट है कि समकालीन वैश्वीकरण के कारण दुनियाभर में कई बहुराष्ट्रीय निगमो (Multintional Corparation) का उदय हुआ। अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के कई देशों में ये निगम राजनीति को प्रभावित करते है।

2. आर्थिक प्रभाव

वैश्वीकरण के सकारात्मक पक्ष को देखें तो इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि वैश्वीकरण के कारण विकासशील देशों ने उच्च विकास दर हासिल की जिससे उन्हें रोजगार पैदा करने तथा गरीबी उन्मूलन में सहायता मिली। चीन द्वारा 1978 में तथा भारत द्वारा 1991 में अपनी अर्थव्यवस्था को खोला गया। दोनों देशों ने इसके बाद तीव्र गति से विकास किया। विदेशी निवेश और विदेशी मुद्रा भण्डार में तेज गति से वृद्धि हुई।

निजी क्षेत्र में प्रतियोगिता का लाभ उपभोक्ताओं को मिला जिसके कारण उन्हें विभिन्न वस्तुयें और सेवायें सस्ते या प्रतियोगी मूल्यों पर मिलने लगी। इंटरनेट व मोबाइल सेवा अर्थात संचार के साधनों का इतने कम समय में बड़ी तेजी से विस्तार वैश्वीकरण से ही संभव हो पाया।

सकारात्मक प्रभावों के साथ-साथ वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभावों को समझना भी आवश्यक है। वैश्वीकरण के कारण कई देशों के स्वदेशी उद्योग बन्द हो गये क्योंकि वे बहुराष्ट्रीय निगमों से प्रतियोगिता में नहीं टिक पाये। इसके कारण बेरोजगारी में वृद्धि हुई। बड़ी कम्पनियाँ आधुनिकतम प्रौद्योगिकी का प्रयोग करती है जिसके कारण मजदूरों की बजाय मशीनों से अधिक काम लिया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक के दबाव में कई विकासशील देशों ने सब्सिडी (Subsidy) बन्द कर दी इसका किसान मजदूर और समाज के अन्य कमजोर वर्गों पर बुरा प्रभाव पड़ा। इसके अलावा वैश्वीकरण की यह कहकर भी आलोचना होती है कि इससे आर्थिक असमानता बढ़ी है।

इस बात पर लगभग सहमति नजर आती है कि वैश्वीकरण को पूरी तरह रोका तो नहीं जा सकता है किन्तु सरकार को कमजोर वर्गों को वैश्वीकरण के दुष्प्रभावों से बचाना चाहिये। सामाजिक सुरक्षा कवज का विस्तार किया जाना चाहिये। शिक्षा, स्वास्थ्य तथा समाज कल्याण के क्षेत्र में राज्य को अधिक सक्रिय भूमिका निभानी चाहिये।

3. सांस्कृतिक प्रभाव

वैश्वीकरण के आलोचकों का मानना है कि इसके कारण एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के लोगों पर पश्चिमी संस्कृति थोपी जा रही है। स्थानीय खान पान की जगह पेप्सी, बर्गर, पिज्जा को बढ़ावा मिल रहा है। इसका कारण यह भी है कि संचार माध्यमों पर विकसित देशों का कब्जा है जिसके कारण उनकी जीवन शैली और खान पान का प्रचार प्रसार अधिक होता है। और यही कारण है कि वह वर्चस्व की स्थिति में है। मूलवासियों की संस्कृति, पहनावा, खान पान विलुप्त होता जा रहा है। यहाँ तक पश्चिमी त्यौहार भी बाजारवाद के कारण अधिक लोकप्रिय होते जा रहे है। वैश्वीकरण उपभोक्तावादी संस्कृति को बढ़ावा दे रहा है। इसके कारण कई समाजों में संघर्ष की स्थिति भी पैदा हो गयी है।

दूसरी तरफ वैश्वीकरण के समर्थकों का मानना है कि वैश्वीकरण के कारण दुनिया की विविध संस्कृतियों में मेलजोल बढ़ा है। लोगों की पंसद नापसंद व व्यक्तिगत स्वतंत्रता का दायरा बढ़ा है। भारत में हम पिज्जा-बर्गर खा रहे है तो पश्चिमी देशों में मसाला डोसा, सांभर बड़ा, पावभाजी आदि भारतीय व्यंजन का स्वाद लिया जा रहा है। नीली जीन्स के ऊपर खादी का कुर्ता सांस्कृतिक मेल जोल का प्रतीक है। अर्थात सांस्कृतिक समरूपता वैश्वीकरण का एक रूप है।

भारत और वैश्वीकरण

भारत द्वारा 1991 में नई आर्थिक नीति की घोषणा की गयी। देश में उदारीकरण और वैश्वीकरण को संरचनात्मक सुधार के नाम से लागू किया गया। भारत में यह निर्णय गंभीर आर्थिक संकट की स्थिति में लिया गया क्योंकि उस समय देश में आयात भुगतान तथा विदेशी ऋण की किशत चुकाने के लिये पर्याप्त विदेशी मुद्रा नहीं थी। इसलिये तत्कालीन प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिम्हा राव तथा वित्त मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की अगवाई में सरकार ने तमाम आलोचनाओं और आंशंकाओं के बावजूद यह कठोर निर्णय लिया जिसका आने वाले समये में देश को बड़ा लाभ हुआ।

भारत के संदर्भ में यह बात बड़ी रोचक है कि यहाँ वाम पंथी और दक्षिण पंथी दोनों ही खेमों द्वारा वैश्वीकरण की आलोचना की गयी। लेकिन इसके साथ-साथ ही हर गुट यह भी स्वीकार करता था कि वैश्वीकरण का विकल्प भी नहीं है। इसलिये पुरानी स्थिति में लोटने की बजाय वे वैश्वीकरण को अपनी विचारधारा के अनुरूप बदलने पर जोर देते रहे। वामपंथी जहाँ पूँजीवादी विस्तार तथा किसान और मजदूरों के हितों की रक्षा की बात करते है तो दक्षिण पंथी वैश्वीकरण के कारण स्वदेशी उद्योगों को पैदा हुये खतरों को दूर करने तथा इसके सांस्कृतिक प्रभाव से समाज बचाने की बात करते है। कुछ गैर सरकारी संगठन पर्यावरण, आदिवासियों व मूलवासियों के विस्थापन के मुदो के आध ार पर भी वैश्वीकरण की आलोचना कर रहे है।

वैश्वीकरण का प्रतिरोध

विश्व भर में वामपंथी विचारकों, गैर सरकारी संस्थानों तथा आम लोगों द्वारा वैश्वीकरण का विरोध हो रहा है। उनका मानना है कि वैश्वीकरण आर्थिक असमानता को बढ़ावा दे रहा है। यह अमीरों को और अधिक अमीर और गरीबों को और अधिक गरीब बना रहा है। दुनिया के 80 प्रतिशत संसाधनों पर 20 प्रतिशत अमीर लोगों का नियत्रंण है जबकि 80 प्रतिशत लोगों को मात्र 20 प्रतिशत संसाधनों से गुजारा करना पड़ता है।

दक्षिणपंथी विचार राज्य के कमजोर होने से चिंतित है। वे वैश्वीकरण को परम्परागत संस्कृति के लिये खतरा मानते है। पर्यावरणवादी भी वैश्वीकरण का यह कह कर विरोध करते है कि इससे जहाँ एक ओर प्राकृतिक संसाधनों का बड़ी निर्ममता से शोषण हो रहा है वहीं दूसरी ओर जल, वायु और भूमि प्रदुषण भी फैल रहा है। जिसका सबसे बड़ा पीड़ित आम इंसान है। यहीं कारण है कि 1999 में विश्व व्यापार संगठन की सियेटल में आयोजित मंत्री स्तरीय बैठक में भारी विरोध प्रदर्शन हुई। वर्ल्ड सोशल फोरम (World social Forum) के तहत वैश्वीकरण के विराधी एक मंच पर आ गये है। यह मानवधिकार कार्यकर्त्ता, पर्यावरणविद, मजदूर, युवा, महिलावादी आदि नव उदारवादियों का संगठन है तथा विश्व भर में वैश्वीकरण के वर्तमान स्वरूप के विरूद्ध लोगों को लामबंद कर रहा है। स्वाभाविक है कि वैश्वीकरण के वर्तमान स्वरूप में कुछ बदलाव आवश्यक है ताकि इसे और अधिक मानवीय बनाया जा सके तथा विकसित देशों द्वारा अपनायी जा रही संरक्षणवाद को समाप्त कर वस्तुओं के साथ-साथ श्रम का प्रवाह हो सके।

शब्दावली

1. वैश्वीकरण–देश की अर्थव्यवस्था का विश्व अर्थव्यवस्था से जुड़ाव की प्रक्रिया जिसके परिणामस्वरूप विचारों, वस्तुओं, सेवाओं पूँजी व श्रम का स्वतंत्र रूप से प्रवाह होता है।
2. उदारीकरण–देश के अन्दर अर्थव्यवस्था पर सरकार का नियंत्रण कम करने निजी क्षेत्र को अधिक स्वतंत्रता प्रदान करना।
3. निजीकरण–सार्वजनिक क्षेत्र में विनिवेश कर उसे निजी हाथों में सौंपना/वेचना।
4. संरक्षणवाद–अपने उद्योगों तथा अपने देश में रोजगार को बचाने के लिये दूसरे देशों से आनेवाली वस्तुओं तथा श्रम को आने रोकना।
5. अन्तराष्ट्रीय वित्तीय संस्थायें–अन्तराष्ट्रीय मुद्राकोष (IMF) और विश्व बैंक (World Bank or IBRD)

क्रियाकलाप–(Activity)

वाहनों और मोबाइल फोन के पाँच-पाँच ब्रॉंड के विषय में जानकारी एकत्रित कीजिए जिसमें उनको बनाने वाली कम्पनी का नाम मूलतः वह कम्पनी किस देश की है। वह अपना उत्पाद जो भारत में बिक रहा है। उसे कहाँ बनाती है तथा उस कम्पनी की वित्तीय स्थिति की जानकारी मिलती हो। इसके अलावा यह भी पता लगाइये कि वह कम्पनी हमारे देश में कितने लोगों को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार देती है।

मूल्य संवर्धन

वैश्वीकरण की अवधारणा को सही ढंग से समझने से छात्र/छात्रओं में वसुधैव कुटम्बकम का मूल्य विकसित होगा। परस्पर निर्भरता को बेहतर ढंग से समझ पायेगे।

मूल्यांकन

1. वैश्वीकरण क्या है?
2. उदारीकरण व निजीकरण को स्पष्ट कीजिए।

3. वे कौन से कारक है जो वैश्वीकरण को बढ़ावा देते हैं।
4. वर्ल्ड सोशल फोरम क्या है?
5. वैश्वीकरण के राजनीतिक प्रभावों का वर्णन कीजिए।
6. वैश्वीकरण के सांस्कृतिक प्रभावों को स्पष्ट कीजिए।
7. भारत ने किन परिस्थितियों में वैश्वीकरण की नीति को अपनाया।
8. वैश्वीकरण के सकारात्मक और नकारात्मको प्रभावों का विश्लेषण कीजिए।

❑❑❑